अल नीनो की आशंका पर केंद्र अलर्ट, किसान हितों की सुरक्षा सर्वोच्च

-श्री शिवराज सिंह चौहान

मेरीखेती

जून 2026 I मूल्य: ₹49

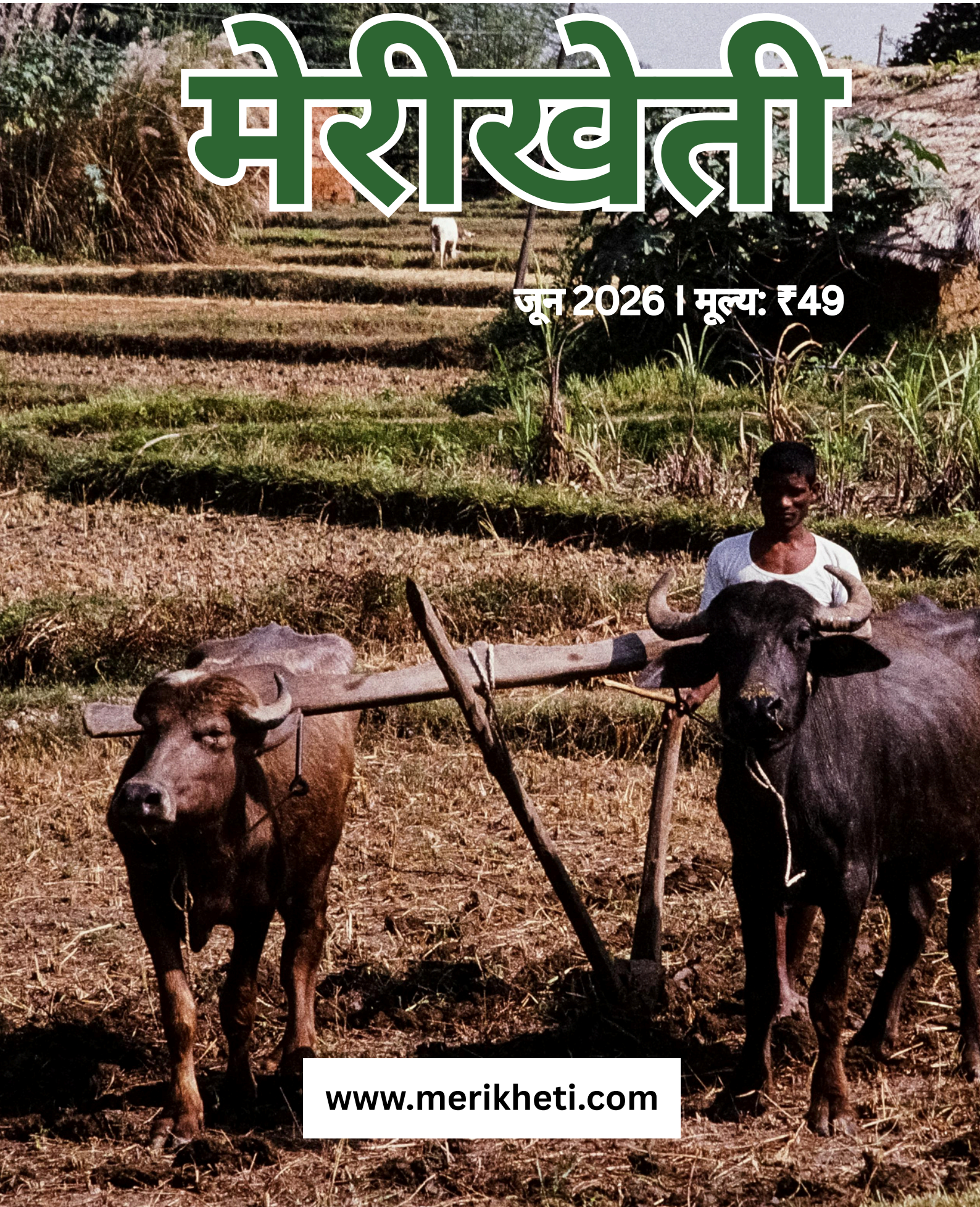

www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलिहान	05 - 13
बागवानी फसलें	14 - 21
मशीनरी	21 - 34
पशुपालन–पशुचारा	34 - 42
औषधीय खेती	42 - 46

विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
91-9899991906, 91-8800777501

संपादकीय

जून महीने में खेती के जरूरी कार्य: समय पर तैयारी ही अच्छी पैदावार की कुंजी

भारत में जून का महीना किसानों के लिए बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। यह समय खरीफ फसलों की तैयारी, खेत प्रबंधन और मानसून की शुरुआत का होता है। किसान पूरे वर्ष की खेती की सफलता के लिए जून महीने में कई महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। यदि इस समय सही योजना और वैज्ञानिक तरीके अपनाए जाएं, तो फसलों की पैदावार और किसानों की आय दोनों में वृद्धि हो सकती है। यही कारण है कि जून को खेती-किसानी की दृष्टि से सबसे व्यस्त और अहम महीनों में गिना जाता है।

जून का महीना मानसून के आगमन का संकेत लेकर आता है। जैसे ही बारिश शुरू होती है, किसान खेतों की जुताई, मिट्टी की तैयारी और बुवाई के कार्यों में जुट जाते हैं। धान, मक्का, सोयाबीन, कपास, बाजरा, ज्वार, मूंगफली और दालों जैसी खरीफ फसलों की बुवाई का यह सबसे उपयुक्त समय माना जाता है। समय पर बुवाई करने से फसलों को पर्याप्त नमी मिलती है और उत्पादन बेहतर होता है।

इस दौरान किसानों के लिए खेत की अच्छी तैयारी सबसे पहला और महत्वपूर्ण कार्य होता है। खेत की गहरी जुताई करने से मिट्टी भुरभुरी बनती है और खरपतवार नियंत्रण में मदद मिलती है। साथ ही वर्षा का पानी भी मिट्टी में अच्छी तरह संरक्षित हो पाता है। कई किसान जून में खेतों में गोबर की खाद और जैविक खाद का उपयोग भी करते हैं, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और फसल स्वस्थ रहती है।

बीज चयन और बीज उपचार भी जून महीने का एक महत्वपूर्ण कार्य है। किसान यदि प्रमाणित और उन्नत किस्मों के बीजों का उपयोग करें, तो फसल उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। बीज उपचार करने से फसलों को शुरुआती रोगों और कीटों से सुरक्षा मिलती है। कृषि वैज्ञानिक भी किसानों को सलाह देते हैं कि वे मौसम और क्षेत्र के अनुसार सही किस्मों का चयन करें।

जून में सिंचाई प्रबंधन और जल संरक्षण पर विशेष ध्यान देना जरूरी होता है। कई क्षेत्रों में मानसून समय पर नहीं पहुंचता, जिससे किसानों को शुरुआती सिंचाई करनी पड़ती है। ऐसे में खेतों में मेड़बंदी, वर्षा जल संचयन और ड्रिप या स्प्रिंकलर जैसी आधुनिक सिंचाई तकनीकों का उपयोग काफी लाभदायक साबित हो सकता है। इससे पानी की बचत के साथ फसलों को पर्याप्त नमी भी मिलती है।

अंत में कहा जा सकता है कि जून का महीना खेती की नींव मजबूत करने का समय होता है। इस महीने किए गए कार्य पूरे सीजन की सफलता तय करते हैं।

श्री दिलीप यादव
सपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

ग्वार की खेती कैसे करें: जानें खेती का सही समय और उन्नत किस्में

ग्वार की खेती किसानों के लिए एक लाभदायक फसल

ग्वार की खेती (Guar Cultivation) भारतीय किसानों के लिए एक लाभदायक और कम लागत वाली खेती मानी जाती है। यह फसल कम पानी में भी अच्छी पैदावार देने की क्षमता रखती है, इसलिए सूखा प्रभावित क्षेत्रों में इसकी खेती विशेष रूप से की जाती है। भारत में ग्वार मुख्य रूप से राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में उगाया जाता है। इनमें राजस्थान अकेला देश के लगभग 70 से 85 प्रतिशत ग्वार उत्पादन में योगदान देता है। ग्वार की फलियों का उपयोग हरी सब्जी के रूप में किया जाता है, जबकि इसके बीजों से ग्वार गम बनाया जाता है। ग्वार गम का उपयोग खाद्य उद्योग, दवा उद्योग, तेल उद्योग तथा कई अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में किया जाता है। इसकी अंतरराष्ट्रीय मांग होने के कारण किसानों को इसकी खेती से अच्छा लाभ प्राप्त होता है।

ग्वार की खेती का महत्व

ग्वार एक ऐसी फसल है जो कम वर्षा और सीमित सिंचाई वाले क्षेत्रों में भी अच्छी तरह उग जाती है। इसकी जड़ें मिट्टी में नाइट्रोजन स्थिर करने का कार्य करती हैं, जिससे भूमि की उर्वरक क्षमता बढ़ती है। यही कारण है कि ग्वार की खेती मिट्टी सुधारक फसल के रूप में भी महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह खरीफ और गर्मी दोनों मौसमों में उगाई जा सकती है। इसकी खेती से किसानों को दोहरा लाभ मिलता है, क्योंकि फलियां सब्जी के रूप में बिकती हैं और बीजों से बनने वाले ग्वार गम की देश और विदेश में अच्छी मांग रहती है। भारत विश्व का सबसे बड़ा ग्वार उत्पादक देश है और हर वर्ष हजारों टन ग्वार का उत्पादन किया जाता है।

ग्वार की खेती का सही समय (Right Time for Guar Cultivation)

भारत में ग्वार की खेती मुख्य रूप से खरीफ मौसम में की जाती है। खरीफ का मौसम जून से सितंबर तक रहता है। ग्वार की बुवाई के लिए पहली बारिश के लगभग 10 से 15 दिन बाद का समय सबसे उपयुक्त माना जाता है। जल्दी पकने वाली किस्मों की बुवाई 10 से 15 जुलाई तक करनी चाहिए, जबकि देर से पकने वाली किस्मों की बुवाई 25 से

30 जुलाई तक की जा सकती है। इस समय मिट्टी में पर्याप्त नमी होती है, जिससे बीजों का अंकुरण अच्छा होता है और पौधों की बढ़वार तेज़ी से होती है।

ग्वार की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी

ग्वार की खेती लगभग सभी प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है, लेकिन बलुई दोमट मिट्टी इसके लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है। ऐसी मिट्टी में पानी का निकास अच्छा होता है और जड़ों में सड़न की समस्या नहीं होती। हल्की रेतीली और हल्की नमकीन मिट्टी में भी इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। मिट्टी का pH मान 7 से 8 के बीच होना चाहिए।

ग्वार की खेती के लिए उपयुक्त मौसम

ग्वार की अच्छी खेती के लिए 30 से 36 सेंटीमीटर वर्षा तथा 32 से 38 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल माना जाता है। यह फसल सूखे को सहन कर सकती है, लेकिन फूल आने और फलियां बनने के समय मिट्टी में पर्याप्त नमी रहना आवश्यक होता है।

ग्वार की खेती के लिए खेत की तैयारी

ग्वार की खेती शुरू करने से पहले खेत की अच्छी तैयारी करनी चाहिए। सबसे पहले मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करें। इसके बाद 2 से 2.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से सड़ी हुई गोबर की खाद खेत में डालें और मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें। इसके बाद कल्टीवेटर से दो बार जुताई करें तथा अंत में पाटा लगाकर खेत को समतल बना लें।

अच्छी तरह तैयार खेत में बीजों का अंकुरण समान रूप से होता है और पौधों की बढ़वार बेहतर होती है।

ग्वार की खेती के लिए उन्नत किस्में

जल्दी पकने वाली किस्में

- पूसा मौसमी
- पूसा नवबहार
- आरजीसी-936
- आरजीसी-986
- आरजीसी-1002
- एचडी-365
- जी-563

देर से पकने वाली किस्में

- पूसा सदाबहार
- दुर्गा पहाड़
- शरद बहार
- लंपिरा
- सिग्मा
- मंजरी
- टेस्टी तारा

इन उन्नत किस्मों से खरीफ मौसम में 600 से 900 किलो प्रति हेक्टेयर तथा गर्मी के मौसम में 2500 से 3000 किलो प्रति हेक्टेयर तक पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

बीज की मात्रा और बीजोपचार

ग्वार की बुवाई के लिए खरीफ मौसम में 15 से 20 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है। जल्दी पकने वाली किस्मों के लिए 15 से 18 किलोग्राम तथा देर से पकने वाली किस्मों के लिए लगभग 25 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर लेना चाहिए। गर्मी के मौसम में 40 से 45 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।

बीजों को बुवाई से पहले 2 ग्राम थिरम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। इसके साथ राइजोबियम, पीएसबी और सूडोमोनास कल्चर का उपयोग भी लाभकारी होता है। इससे बीजों का अंकुरण अच्छा होता है और पौधों में रोगों का प्रकोप कम होता है।

ग्वार की खेती के लिए बुवाई की विधि

ग्वार की बुवाई हमेशा लाइन विधि से करनी चाहिए। इससे पौधों को पर्याप्त जगह मिलती है और खेत की देखभाल आसान हो जाती है। खरीफ मौसम में कतार से कतार की दूरी 40 से 50 सेंटीमीटर तथा

MASSEY FERGUSON

TAFE 65 YEARS

MASTER OF PUDDLING

7052 L

SPLASH PROTECT FENDER

FULLY SEALED 4WD FRONT AXLE

20% LESSER WEIGHT COMPARED TO TRADITIONAL 4WD TRACTORS

पौधे से पौधे की दूरी लगभग 15 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। गर्मी के मौसम में कतारों की दूरी लगभग 20 सेंटीमीटर रखी जाती है। बीजों को 5 से 10 सेंटीमीटर की गहराई पर बोना चाहिए ताकि अंकुरण अच्छा हो सके।

ग्वार की खेती में खरपतवार प्रबंधन

ग्वार की फसल में खरपतवार नियंत्रण बहुत जरूरी होता है। बुवाई के लगभग 20 से 25 दिन बाद पहली निराई-गुड़ाई करनी चाहिए। इससे खेत में खरपतवार कम होते हैं और पौधों की जड़ों तक हवा और पोषण अच्छी तरह पहुंचता है।यदि खेत में खरपतवार अधिक हों तो पेंडिमेथालिन 0.75 से 1 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव किया जा सकता है। खेत की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए ताकि खरपतवार समय रहते नियंत्रित किए जा सकें।

ग्वार की खेती में सिंचाई प्रबंधन

यदि वर्षा समय पर और पर्याप्त मात्रा में हो रही हो तो अतिरिक्त सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन वर्षा कम होने की स्थिति में 1 से 2 सिंचाई करनी चाहिए। फूल आने और फलियां बनने के समय मिट्टी में नमी बनाए रखना आवश्यक होता है।

ग्वार की कटाई और उत्पादन

ग्वार की हरी फलियां लगभग 50 से 60 दिनों में तैयार हो जाती हैं। यदि सब्जी के लिए खेती की जा रही हो तो हरी और मुलायम फलियों की समय पर तुड़ाई करनी चाहिए। बीज उत्पादन के लिए फसल को 90 से 100 दिनों तक खेत में रहने दें और फलियों के सूखने पर कटाई करें। उचित देखभाल और उन्नत तकनीकों के उपयोग से खरीफ मौसम में 600 से 900 किलो प्रति हेक्टेयर तथा गर्मी के मौसम में 2500 से 3000 किलो प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

ग्वार की खेती से लाभ

ग्वार की खेती किसानों के लिए कम लागत और अधिक लाभ वाली खेती मानी जाती है। इसकी फलियां बाजार में अच्छे दामों पर बिकती हैं और बीजों से बनने वाले ग्वार गम की अंतरराष्ट्रीय मांग होने के कारण किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।
सरकार भी ग्वार की खेती को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चला रही है। किसान अपने नजदीकी कृषि विभाग से संपर्क कर सब्सिडी तथा अन्य सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

सावधानियां

- हमेशा प्रमाणित और उन्नत बीजों का ही उपयोग करें।
- खेत में पानी का जमाव न होने दें।
- संतुलित मात्रा में ही उर्वरक और कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- मौसम के अनुसार बुवाई और सिंचाई करें।
- फसल की नियमित निगरानी करते रहें।

ग्वार की खेती भारतीय किसानों के लिए एक लाभदायक, कम लागत और टिकाऊ खेती का विकल्प है। सही समय पर बुवाई, उन्नत किस्मों का चयन, उचित सिंचाई, संतुलित उर्वरक प्रबंधन और नियमित देखभाल द्वारा किसान अच्छी पैदावार और अधिक मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। यह फसल न केवल किसानों की आय बढ़ाती है बल्कि मिट्टी की उर्वरता सुधारने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बाजरे की खेती से अधिक पैदावार लेने के लिए कुछ सुझाव

बाजरे की खेती खरीफ के मौसम में की जाती हैं। जरे की फसल मुख्य रूप से मोटे अनाज के रूप में उगाई जाती है। बाजरे की फसल का प्रयोग पशुओं के चारे के रूप में भी किया जाता है। बाजरे की फसलों को बहुत कम पानी की आवश्यकता होती हैं इसकी खेती में किसानों को कई बातो का ध्यान रखना चाहिए इस लेख में हम आपको कुछ सुझाव देंगे जिनसे की आप बाजरे की फसल से अच्छी पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।

अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए भूमि की तैयारी

वैसे तो बाजरे की खेती हर प्रकार की मिट्टी में आसानी से की जा सकती हैं। कम सिंचाई वाली फसल का नाम लेते हैं तो बाजरे की फसल का नाम सबसे पहले आता हैं। बाजरे की खेती के लिए रेतीली ,रेतीली दोमट मिट्टी बहुत उत्तम होती है। जलभराव वाली मिट्टी की स्थिति में यह अच्छी तरह से उपज नहीं देता। अच्छी पैदावार लेने के लिए खेती की अच्छे से जुताई करें। हैरो या कल्टीवेटर से खेत की एक या दो बार जुताई करके खेत को समतल करके बाद में बुवाई करे।

अच्छी पैदावार देने वाली बाजरे की उन्नत किस्में

अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए अच्छी और उन्नत किस्मों का चुनाव करना बहुत आवश्यक होता हैं। अधिकांश बाजरा क्षेत्र में संकर किस्मों के उगाई जाती है जबकि सूखे इलाके में देशी किस्मों को प्राथमिकता दी जाती है। बाजरे की उच्च उपज देने वाली किस्में निम्नलिखित है -

Nandi 70, Nandi 72, 86M64 , HHB 234, Bio 70, HHB-226, RHB-177, KBH 108, GHB 905, 86M89, MPMH 17, Kaveri Super Boss, Bio 448, MP 7872, MP 7792, 86M86, 86M66, RHB-173, HHB 67 आदि किस्में अधिक पैदावार देती हैं।

बाजरे की बुवाई का समय और बीज उपचार

देश के उत्तर और मध्य भागों मेंखरीफ बाजरा की बुआई मानसून के आगमन के साथ अर्थात जुलाई के प्रथम पखवाड़े में कर देनी चाहिए। रोगों से बचाव के

लिए बीज उपचार करना बहुत आवश्यक होता हैं। बाजरे की बुवाई के लिए 1 – 1. 5 किलोग्राम बीज काफी है। जैव कीटनाशकों से बीज उपचार (ट्राइकोडर्मा हर्जियानम @ 4 ग्राम किग्रा) या थीरम 75% धूल प्रति 3 ग्राम किलो बीज के हिसाब से करें इससे मिट्टी में पैदा होने वाली बीमारियों के खिलाफ मदद मिलेगी।

बाजरे की फसल में खाद और उर्वरक प्रबंधन

40 किलोग्राम नाइट्रोजन + 20 किलोग्राम फॉस्फोरस /हेक्टेयर और शुष्क क्षेत्रों के लिए 60 किलोग्राम नाइट्रोजन/हेक्टेयर + 30 किलोग्राम फॉस्फोरस / हेक्टेयर का इस्तेमाल करे। अर्ध-शुष्क क्षेत्रों को एकमात्र बाजरा के साथ-साथ इंटरक्रॉपिंग सिस्टम के लिए अनुशंसित किया जाता है।

अच्छी पैदावार लेने के लिए बाजरे की फसल में सिंचाई प्रबंधन

वैसे तो बाजरे की फसल को कम पानी की आवश्यकता होती हैं। इसकी खेती वर्षा आधारित स्थिति में की जाती हैं। अगर लंबे समय तक सूखे के दौर बने रहे तो फसल के महत्वपूर्ण चरणों में सिंचाई की जानी चाहिए। यदि जल उपलब्ध हो तो वृद्धि अर्थात कल्ले निकलना, पुष्पन और दानों के विकास की अवस्था में सिंचाई करें।

जून में उगाई जाने वाली फसलों की मुनाफादायक किस्में

किसानों को अच्छी उपज हांसिल करने के लिए फसल की चयन और समय को ध्यान में रखना चाहिए। फसल को समय पर खाद, पानी और कटाई भी अच्छी उपज के लिए आवश्यक है। किसानों की सुविधाओं को मद्देनजर रखते हुए आज हम मेरीखेती के जरिए से जून माह में बोई जाने वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विषय में जानकारी प्रदान कर रहे हैं।

धान की इन किस्मों का करें उत्पादन

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, धान की स्वर्णा, पंत-10, सरजू-52, नरेन्द्र-359, जबकि टा.-3, पूसा बासमती-1, हरियाणा बासमती सुगंधित तथा पंत संकर धान-1 व नरेन्द्र संकर धान-2 प्रमुख उन्नत संकर किस्में हैं।

धान की किस्मों की बीज दर

धान की महीन किस्मों की प्रति हेक्टेयर बीज दर 30 किग्रा, मध्यम के लिए 35 किग्रा, मोटे धान हेतु 40 किग्रा तथा ऊसर भूमि के लिए 60 किग्रा पर्याप्त होता है, जबकि संकर किस्मों के लिए प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है।

मक्का इन किस्मों की करें बुवाई

अगर आप मक्का की बुवाई करना चाहते हैं, तो आपको इसकी बुवाई 25 जून तक संपन्न कर लेनी चाहिए। अगर सिंचाई की सुविधा हो तो इसकी बुवाई का कार्य 15 जून तक भी पूरा किया जा सकता है। मक्का की उन्नत किस्मों में शक्तिमान-1, एच.क्यू.पी.एम.-1, संकुल मक्का की तरुण, नवीन, कंचन, श्वेता तथा जौनपुरी सफेद व मेरठ पीली देशी प्रजातियां काफी अच्छी मानी जाती हैं।

जून में अरहर की इन किस्मों की करें बुवाई

किसान बेहतर जल व्यवस्था होने पर अरहर की उन्नत किस्म प्रभात व यू.पी.ए.एस.-120 शीघ्र पकने वाली तथा बहार, नरेंद्र अरहर-1 व मालवीय अरहर-15 किस्मों की बुवाई कर सकते हैं। अरहर की बुवाई के लिए प्रति हैक्टेयर क्षेत्र के लिए 12-15 किग्रा बीज पर्याप्त होता है। अरहर के बीजों को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के बाद ही बोना चाहिए।

पशु चारे की इन फसलों की करें खेती

पशुओं के लिए हरे चारे की कमी को पूरा करने के लिए इस माह आप ज्वार, लोबिया और चरी जैसी चारे वाली फसलों की बुवाई कर सकते हैं। बारिश न होने की दशा में पलेवा देकर बुवाई की जा सकती है।

जून माह में करें इन सब्जियों की खेती

जून के महीने में आप बैंगन, मिर्च और अगेती फूलगोभी की पौध लगा सकते हैं। भिंडी की बुवाई का भी यह काफी अनुकूल समय है। इसके अतिरिक्त लौकी, खीरा, चिकनी तोरी, आरा तोरी, करेला और टिंडा की बुवाई भी इस महीने की जा सकती है।

भिंडी की उन्नत किस्मों में परभनी क्रांति, आजाद भिंडी, अर्का अनामिका, वर्षा, उपहार, वी.आरओ.- 5, वी.आर.ओ.-6 व आई.आई.वी.आर.-10 भिंडी की शानदार किस्में मानी जाती हैं।

धान की नर्सरी विधियाँ: अधिक उपज के लिए सही तरीका

धान (Rice) भारत की एक प्रमुख खाद्यान्न फसल है, जो देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसकी खेती के लिए उपयुक्त जलवायु, समुचित जल आपूर्ति और उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता होती है। धान की खेती की शुरुआत नर्सरी तैयार करने से होती है, जहां पर बीजों से पौध तैयार किए जाते हैं, जिन्हें बाद में मुख्य खेत में रोपा जाता है।इस लेख में हम आपको धान की नर्सरी तैयार करने की तीन प्रमुख विधियों के बारे में बताएंगे, जिनसे पौध न केवल जल्दी तैयार होती है, बल्कि स्वस्थ और अधिक उत्पादक भी बनती है – जिससे आपकी फसल की उपज दोगुनी हो सकती है।

धान की नर्सरी का महत्व

नर्सरी वह स्थान होता है जहां धान के बीजों को अंकुरित करके छोटे पौधों में बदला जाता है। नर्सरी में पौधों को बेहतर देखभाल और पोषण मिलता है, जिससे वे मजबूत बनते हैं और रोपाई के बाद बेहतर

लगे हटके
करे हटके

बोल्ड एंड ब्लैक

DIGITRAC
PP43i

37.3 kW श्रेणी
50 HP श्रेणी

वृद्धि करते हैं। इससे उत्पादकता बढ़ती है, फसल की गुणवत्ता सुधरती है और पौधे रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी होते हैं।

धान की नर्सरी तैयार करने की प्रमुख विधियां

1. गीली नर्सरी विधि (Wet Nursery Method)

मुख्य विशेषताएं:

- पारंपरिक और सबसे ज्यादा इस्तेमाल की जाने वाली विधि।
- उन क्षेत्रों के लिए उपयुक्त जहां पर्याप्त पानी उपलब्ध हो।
- एक हेक्टेयर खेत के लिए लगभग 20 सेंट (800 वर्ग मीटर) क्षेत्र में नर्सरी तैयार की जाती है।

तैयारी प्रक्रिया:

- भूमि की दो बार सूखी जुताई करें।
- 1 टन एफवाईएम/कम्पोस्ट डालें और फिर खेत को सिंचित करें।
- मिट्टी को एक सप्ताह तक गीला रखें, फिर दो बार पोखर (ploughing) करें।
- समतलीकरण के बाद 2.5 मीटर चौड़ाई और 8–10 मीटर लंबाई के बेड बनाएं।
- बिस्तरों के बीच में 30–50 सेमी की चौड़ाई में पानी निकासी के लिए नाली छोड़ें।
- पूर्व-अंकुरित बीज बुआई के 20–25 दिन बाद रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं।

2. डैपोग/मैट नर्सरी विधि (Dapog/Mat Nursery Method)

मुख्य विशेषताएं:

- कम जगह में तैयार होने वाली उन्नत विधि।
- एक हेक्टेयर के लिए केवल 100 वर्ग मीटर (2.5 सेंट) की आवश्यकता।
- 14–20 दिनों में पौधे रोपाई के लिए तैयार।

तैयारी प्रक्रिया:

समतल क्षेत्र का चयन करें और नीचे पॉलीथीन शीट, केले के पत्ते या सीमेंटेड फर्श बिछाएं ताकि जड़ें जमीन में न घुसें।

मिट्टी मिश्रण तैयार करें:

- 70% मिट्टी + 20% कम्पोस्ट + 10% चावल की भूसी
- इसमें 1.5 किग्रा DAP या 2 किग्रा NPK (17:17:17) मिलाएं।
- लकड़ी के फ्रेम में 4 सेमी मोटाई तक यह मिश्रण भरें।
- बीजों को 24 घंटे भिगोकर, फिर 24 घंटे सेतें और अंकुरित होने पर बोएं।
- बीजों को 5 मिमी मोटी सूखी मिट्टी की परत से ढक दें।

3. सूखी नर्सरी विधि (Dry Nursery Method) (संक्षेप में उल्लेख करें)

यह विधि उन क्षेत्रों में उपयोगी होती है जहां पानी की उपलब्धता सीमित होती है। इसमें बीजों को सीधे सूखी और तैयार की गई मिट्टी में बोया जाता है और सीमित सिंचाई की जाती है।

निष्कर्ष

यदि आप धान की उपज को बढ़ाना चाहते हैं, तो नर्सरी तैयार करने की विधियों को सही ढंग से अपनाना बहुत जरूरी है। गीली, डैपोग और सूखी नर्सरी विधियों में से आप अपने क्षेत्र की जलवायु, जल-स्रोत और संसाधनों के अनुसार उपयुक्त विधि चुन सकते हैं। अच्छी तरह से तैयार की गई नर्सरी मजबूत पौधे और अधिक उपज का आधार बनती है।

सीताफल की खेती कैसे करें: होगी लाखों रुपए की कमाई

सीताफल की खेती किसानों के लिए बन रही लाभकारी व्यवसाय

सीताफल जिसे आम बोलचाल की भाषा में शरीफा भी कहा जाता है, आज किसानों के लिए मुनाफे का शानदार विकल्प बनता जा रहा है। यह फल स्वादिष्ट, मीठा और पौष्टिक गुणों से भरपूर होता है। इसमें विटामिन, मिनरल्स, फाइबर और प्राकृतिक शर्करा प्रचुर मात्रा में पाई जाती है, जिसके कारण इसकी बाजार में लगातार मांग बनी रहती है। सीताफल का उपयोग केवल फल के रूप में ही नहीं बल्कि शरबत, मिठाई, आइसक्रीम और वाइन बनाने में भी किया जाता है। यही वजह है कि इसकी व्यावसायिक खेती तेजी से लोकप्रिय हो रही है। देश में किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार भी बागवानी फसलों को बढ़ावा दे रही है और कई राज्यों में बागवानी मिशन के तहत किसानों को सब्सिडी भी उपलब्ध कराई जाती है। कम लागत और बेहतर मुनाफे के कारण सीताफल की खेती छोटे और मध्यम किसानों के लिए भी लाभदायक साबित हो रही है।

सीताफल के सेवन से मिलते हैं कई स्वास्थ्य लाभ

सीताफल केवल स्वादिष्ट फल ही नहीं बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी बेहद फायदेमंद माना जाता है। इसमें मौजूद पोषक तत्व शरीर की कई समस्याओं को दूर करने में मदद करते हैं। यह पाचन तंत्र को मजबूत करता है और शरीर की मेटाबॉलिज्म प्रक्रिया को बेहतर बनाता है। इसके अलावा इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट शरीर को हानिकारक रसायनों और फ्री रेडिकल्स से बचाने में मदद करते हैं। डॉक्टर अक्सर गर्भवती महिलाओं को सीताफल खाने की सलाह देते हैं क्योंकि यह एनीमिया को कम करने और गर्भावस्था के दौरान पोषण प्रदान करने में सहायक होता है। इसके अलावा यह ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखने, त्वचा को स्वस्थ बनाने, बालों को पोषण देने और शरीर की कमजोरी दूर करने में भी उपयोगी माना जाता है। स्वास्थ्य के प्रति लोगों की बढ़ती जागरूकता के कारण बाजार में सीताफल की मांग लगातार बढ़ रही है, जिससे किसानों को अच्छे दाम मिल रहे हैं।

सीताफल की बुवाई के लिए सही समय और जलवायु

सीताफल की खेती (Sitafal ki kheti) के लिए सही समय और अनुकूल जलवायु का चयन बहुत जरूरी होता है। इसकी बुवाई वर्ष में दो बार की जा सकती है। पहला समय जुलाई से अगस्त के बीच और दूसरा फरवरी से मार्च के बीच सबसे उपयुक्त माना जाता है। यह फल गर्म और हल्की शुष्क जलवायु में अच्छी पैदावार देता है। जिन क्षेत्रों में अधिक ठंड और पाला नहीं पड़ता, वहां इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। अत्यधिक ठंड से पौधों की वृद्धि प्रभावित हो सकती है, इसलिए किसानों को ऐसे क्षेत्रों का चयन करना चाहिए जहां तापमान संतुलित बना रहे। गर्म मौसम में पौधे तेजी से विकसित होते हैं और फलों की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। यही कारण है कि देश के कई राज्यों में इसकी खेती तेजी से बढ़ रही है।

सीताफल की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी और खेत की तैयारी

सीताफल की खेती (Custard Apple Farming) लगभग सभी प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है, लेकिन अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी इसके लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है। कमजोर और पथरीली जमीन पर भी इसकी अच्छी पैदावार ली जा सकती है। खेती शुरू करने से पहले मिट्टी की जांच करवाना बेहद जरूरी है ताकि पीएच मान की जानकारी मिल सके। सीताफल की खेती के लिए मिट्टी का आदर्श पीएच मान 5.5 से 7 के बीच होना चाहिए। खेत तैयार करते समय 60×60×60 सेंटीमीटर के गड्ढे खोदे जाते हैं और प्रत्येक गड्ढे के बीच लगभग 5×5 मीटर की दूरी रखी जाती है। खुदाई के बाद गड्ढों को 15 से 20 दिनों तक खुला छोड़ दिया जाता है ताकि मिट्टी में मौजूद हानिकारक कीट और जीवाणु नष्ट हो सकें। इसके बाद गड्ढों में सड़ी हुई गोबर खाद, खली और एनपीके उर्वरक मिलाकर भराई की जाती है।

सीताफल की बुवाई की सही प्रक्रिया

सीताफल की बुवाई (Sowing of Custard Apple) के लिए पौध तैयार करने की वैज्ञानिक विधि अपनाना अधिक फायदेमंद माना जाता है। किसान पॉलीथिन की थैलियों में मिट्टी भरकर उसमें बीज डालते हैं और पौध तैयार होने के बाद इन्हें खेत में रोपित किया जाता है। इससे पौधों की वृद्धि बेहतर होती है और नुकसान की संभावना कम रहती है।

गड्ढों में खाद और उर्वरक डालने के बाद 3 से 4 दिनों तक सिंचाई की जाती है ताकि मिट्टी अच्छी तरह तैयार हो सके। इसके बाद पौधों की रोपाई की जाती है। पौधों की उचित दूरी बनाए रखना जरूरी होता है ताकि उन्हें पर्याप्त धूप और पोषण मिल सके। विशेषज्ञों के अनुसार यदि शुरुआत में पौधों की सही देखभाल की जाए तो आगे चलकर उत्पादन काफी बेहतर मिलता है।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन से बढ़ती है पैदावार

सीताफल की अच्छी पैदावार के लिए संतुलित मात्रा में खाद और उर्वरकों का उपयोग करना बेहद आवश्यक होता है। प्रति पेड़ लगभग 20 से 22 किलोग्राम जैविक खाद या गोबर की खाद देना लाभकारी माना जाता है। इसके साथ ही 40 ग्राम नाइट्रोजन, 60 ग्राम फॉस्फोरस और 60 ग्राम पोटाश की मात्रा भी हर वर्ष दी जानी चाहिए। हालांकि, उर्वरकों का उपयोग करने से पहले मिट्टी की जांच अवश्य करवानी चाहिए और कृषि विशेषज्ञों की सलाह लेना बेहतर होता है। जैविक खाद का उपयोग करने से मिट्टी की उर्वरता लंबे समय तक बनी रहती है और पौधों को आवश्यक पोषण मिलता है। संतुलित पोषण मिलने से पौधों की वृद्धि तेजी से होती है और फलों की गुणवत्ता भी बेहतर बनती है।

सिंचाई और देखभाल से मिलती है बेहतर उपज

सीताफल की खेती में सिंचाई का विशेष महत्व होता है। ड्रिप सिंचाई और छिड़काव विधि इस खेती के

लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है क्योंकि इससे पानी की बचत होती है और पौधों को पर्याप्त नमी मिलती रहती है। गर्मियों के मौसम में पौधों को हर 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करना जरूरी होता है। पौधों की नियमित देखभाल, खरपतवार नियंत्रण और समय-समय पर छिड़काव करने से रोगों और कीटों से बचाव किया जा सकता है। एक पूर्ण रूप से विकसित पौधे से हर साल लगभग 100 फल प्राप्त किए जा सकते हैं, जो करीब 50 किलोग्राम उत्पादन के बराबर होता है। अच्छी देखभाल और वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करके किसान उत्पादन को और अधिक बढ़ा सकते हैं।

सीताफल की खेती से किसानों को हो सकती है लाखों की कमाई

सीताफल की खेती कम लागत में अधिक मुनाफा देने वाली फसल मानी जाती है। एक एकड़ खेत में लगभग 400 से 450 पौधे लगाए जा सकते हैं। इससे सालाना लगभग 30 क्विंटल तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। बाजार में सीताफल की अच्छी कीमत मिलने के कारण किसान इससे सालाना 1 लाख से सवा लाख रुपये तक की कमाई कर सकते हैं। यदि किसान आधुनिक तकनीकों और उचित प्रबंधन के साथ खेती करें तो मुनाफा और अधिक बढ़ाया जा सकता है। वर्तमान समय में बागवानी फसलों की मांग तेजी से बढ़ रही है और सीताफल की खेती किसानों के लिए आय का स्थायी स्रोत बन सकती है। विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले वर्षों में इसकी खेती और अधिक लोकप्रिय होगी तथा किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

भारत में आम की किस्में

आम भारत की प्रमुख फल फसल है और इसे फलों का राजा माना जाता है। आम का उपयोग इसके विकास के सभी चरणों में किया जाता है – कच्चे और पके दोनों रूपों में। कच्चे आम का उपयोग चटनी, अचार और रस बनाने में होता है। पके आम न केवल सीधे खाने के लिए, बल्कि स्क्वैश, सिरप, नेक्टर, जैम और जेली जैसे कई उत्पादों के निर्माण में भी उपयोग किए जाते हैं। आम की गुठली में 8–10% तक उच्च गुणवत्ता वाला वसा होता है, जिसका उपयोग साबुन बनाने में और कोला के विकल्प के रूप में कन्फेक्शनरी में किया जा सकता है। आज के इस लेख में हम आपको आम की उन्नत किस्मों के बारे में जानकारी देंगे।

आम की उन्नत किस्में

आम की किस्मों की बाते करे तो भारत में लगभग 1000 किस्मों से भी अधिक आम किस्में पाई जाती हैं, यहां आप आम की कुछ खास किस्मों के बारे में जानेंगे जी को अधिक उपज देती हैं।

- मल्लिका – यह नीलम और दशहरी का संकर (हाइब्रिड) है। इसके फल मध्यम आकार के, कैडमियम रंग के और अच्छी गुणवत्ता वाले होते

WIDER PLATFORM WITH DOUBLE FOOTSTEP

Enhances operator comfort

- हैं। यह नियमित रूप से फल देने वाली किस्म मानी जाती है।
- अमरपाली – यह दशहरी और नीलम का संकर है। यह एक बौनी और जोरदार बढ़ने वाली किस्म है, जो नियमित और देर से फल देती है। इसकी औसत उपज 16 टन प्रति हेक्टेयर होती है और एक हेक्टेयर में लगभग 1600 पौधे लगाए जा सकते हैं।
- मंजीरा – यह रमानी और नीलम का संकर है। यह अर्ध-बौनी और नियमित रूप से फल देने वाली किस्म है। फल मध्यम आकार के, हल्के पीले रंग के, गूदा रेशारहित, सख्त और स्वाद में मीठे होते हैं।
- रत्ना – यह नीलम और अल्फांसो का संकर है। यह नियमित फल देने वाली किस्म है और स्पंजी टिशू से मुक्त है। इसके फल मध्यम आकार के, उत्कृष्ट गुणवत्ता वाले होते हैं। गूदा गहरा नारंगी, रेशारहित और सख्त होता है तथा घुलनशील ठोस पदार्थ (TSS) 19–21 ब्रिक्स होता है।
- अर्का अरुणा – यह बंगनपल्ली और अल्फांसो का संकर है। यह नियमित फल देने वाली और बौनी किस्म है। प्रति हेक्टेयर लगभग 400 पौधे लगाए जा सकते हैं। इसके फल बड़े आकार के (500–700 ग्राम), आकर्षक रंग वाले होते हैं। गूदा रेशारहित, मीठा (20–22 ब्रिक्स) और गूदे का प्रतिशत 73% होता है। फल स्पंजी टिशू से मुक्त होते हैं।
- अर्का पुनीत – यह अल्फांसो और बंगनपल्ली का संकर है। यह नियमित और भारी उपज देने वाली किस्म है। फल मध्यम आकार (220–250 ग्राम), आकर्षक रंग और लाल आभा लिए होते हैं। गूदा रेशारहित, गूदे का प्रतिशत 70% होता है। फल स्वाद में मीठे (20–22 ब्रिक्स), अच्छी भंडारण क्षमता वाले और प्रसंस्करण के लिए उपयुक्त होते हैं।
- अर्का अनमोल – यह अल्फांसो और जनार्दन पसंद का संकर है। यह अर्ध-बौना पौधा होता है और नियमित रूप से फल देता है। फल स्पंजी टिशू से मुक्त होते हैं और समान रूप से पीले रंग में पकते हैं। इसकी भंडारण क्षमता बहुत अच्छी होती है, जिससे यह निर्यात के लिए उपयुक्त है। इसमें शर्करा और अम्ल का संतुलन उत्कृष्ट होता है। औसतन फलों का वजन 300 ग्राम होता है और गूदा नारंगी रंग का होता है।

अमरूद की जापानी रेड डायमंड किस्म: खेती से होगी शानदार कमाई

आजकल देश के किसान पारंपरिक खेती की बजाय विशेष किस्मों की फलों की खेती कर बेहतर मुनाफा कमा रहे हैं। ऐसी ही एक बेहद लोकप्रिय किस्म है जापानी रेड डायमंड अमरूद, जिसकी बाजार में मांग तेजी से बढ़ रही है। इसकी खासियत इसका बेहतरीन स्वाद और मिठास है। इस किस्म के अमरूद की कीमत बाज़ार में 100 से 150 रुपये प्रति किलो तक होती है। देश के कई राज्यों में किसान इसकी सफल खेती करके अच्छा खासा लाभ कमा रहे हैं। आइए जानते हैं रेड डायमंड अमरूद की खेती से जुड़ी सारी जरूरी जानकारी।

उपयुक्त जलवायु और मिट्टी

जलवायु

रेड डायमंड अमरूद की खेती लगभग हर प्रकार की जलवायु में की जा सकती है, लेकिन बेहतर उत्पादन के लिए 10°C से 42°C के बीच का तापमान सबसे उपयुक्त होता है। तापमान 10 डिग्री से नीचे जाने पर भी इसकी उपज पर ज्यादा असर नहीं पड़ता।

मिट्टी

मिट्टी की बात करें तो यह किस्म हर तरह की मिट्टी में उगाई जा सकती है, लेकिन काली या बलुई दोमट मिट्टी में इसके सबसे अच्छे परिणाम मिलते हैं। मिट्टी का पीएच 7 से 8 के बीच होना चाहिए, जिससे उपज में वृद्धि होती है।

पौधों की रोपाई

सबसे पहले पौधों को नर्सरी में तैयार किया जाता है, उसके बाद इन्हें मुख्य खेत में लगाया जाता है। रोपाई के समय पौधों के बीच पर्याप्त दूरी रखना आवश्यक है।

- पौधे से पौधे की दूरी: 6 फीट
- कतार से कतार की दूरी: 8 फीट

साल में दो बार पौधों की छंटाई करनी चाहिए ताकि उनकी बढ़वार बेहतर हो। जब फल चीकू के आकार के हो जाएं, तब उन्हें अखबार या फोम बैग से ढक देना चाहिए। इससे फल सही तरीके से पकते हैं और उन पर दाग-धब्बे नहीं आते।

खाद और सिंचाई प्रबंधन

रेड डायमंड अमरूद की खेती में पोषण प्रबंधन बेहद जरूरी है।

1. जैविक खाद: गोबर की खाद और वर्मी कम्पोस्ट
2. रासायनिक उर्वरक: एनपीके, सल्फर, मैग्नीशियम सल्फेट, कैल्शियम नाइट्रेट और बोरॉन

सिंचाई के लिए ड्रिप सिस्टम सबसे उपयुक्त माना जाता है, क्योंकि यह मिट्टी की नमी को बनाए रखता है और पौधों की जरूरत के अनुसार पानी पहुंचाता है।

रेड डायमंड अमरूद की खेती से कितनी कमाई होती है

रेड डायमंड अमरूद बाहर से आम अमरूद जैसा लगता है, लेकिन इसका स्वाद नाशपाती जैसा मीठा और गूदा तरबूज की तरह लाल होता है।

- बाजार मूल्य: ₹100–₹150 प्रति किलो
- देशी अमरूद की तुलना में कमाई: लगभग तीन गुना अधिक
- खर्च: कम लागत में अधिक मुनाफा

इस किस्म की खेती में लागत अपेक्षाकृत कम होती है, लेकिन बाजार में अच्छी कीमत मिलने के कारण किसान बड़ी कमाई कर सकते हैं।

यदि आप फल की खेती की ओर बढ़ना चाहते हैं तो जापानी रेड डायमंड अमरूद की खेती एक लाभकारी विकल्प हो सकता है। यह न केवल कम खर्चीली है, बल्कि बाजार में इसकी भारी मांग भी है, जिससे किसानों को बेहतर आमदनी मिलती है।

आधुनिक तकनीक से चीकू की खेती कैसे करें: जानें पूरी जानकारी

चीकू की बाजार में बढ़ती मांग

चीकू एक ऐसा फल है जो स्वाद के साथ-साथ पोषण के लिहाज से भी बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें विटामिन C, फाइबर, खनिज और कई जरूरी पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में मदद करते हैं। यही कारण है कि डॉक्टर भी अक्सर बीमार लोगों को चीकू खाने की सलाह देते हैं। इसकी लगातार बढ़ती मांग ने इसे किसानों के लिए एक लाभकारी फसल बना दिया है। बाजार में चीकू का दाम आमतौर पर 100 से 120 रुपये प्रति किलो के बीच रहता है, जो इसे नकदी फसल के रूप में आकर्षक बनाता है।

छोटे किसानों के लिए बेहतर विकल्प

चीकू की खेती (Chikoo Cultivation) खासतौर पर छोटे और मध्यम वर्ग के किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है। कम जमीन में भी इसकी खेती करके अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा, चीकू एक ऐसा फल है जिसे किसान सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचाकर बेहतर कीमत प्राप्त कर सकते हैं। पारंपरिक फसलों की तुलना में इसमें बिचौलियों की भूमिका कम होती है, जिससे किसानों को अधिक मुनाफा मिलता है। इस वजह से यह खेती किसानों के लिए आय बढ़ाने का अच्छा माध्यम बन रही है।

उपयुक्त मिट्टी का चयन

चीकू की सफल खेती के लिए सही मिट्टी का चयन बेहद जरूरी होता है। इसके लिए रेतीली काली मिट्टी और जलोढ़ मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती हैं। मिट्टी का पीएच स्तर 6.0 से 8.0 के बीच होना चाहिए, जिससे पौधों की वृद्धि अच्छी तरह हो सके। अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी चीकू के पौधों के लिए अधिक लाभदायक होती है, क्योंकि जलभराव की स्थिति में पौधों की जड़ें प्रभावित हो सकती हैं। इसलिए खेत का चयन करते समय इन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

अनुकूल जलवायु की जरूरत

चीकू की खेती के लिए मध्यम जलवायु सबसे उपयुक्त होती है। अत्यधिक ठंड या पाला इस फसल के लिए नुकसानदायक होता है। चीकू के पौधों के

लिए 10 से 38 डिग्री सेल्सियस तापमान आदर्श माना जाता है। बहुत अधिक गर्मी या अत्यधिक ठंड दोनों ही स्थितियों में पौधों की वृद्धि प्रभावित हो सकती है। इसलिए किसानों को ऐसे क्षेत्र का चयन करना चाहिए जहां जलवायु संतुलित हो और मौसम स्थिर बना रहे।

बुआई का सही समय

चीकू की खेती में सही समय पर बुआई करना बहुत महत्वपूर्ण है। वर्षा आधारित क्षेत्रों में सितंबर के अंतिम सप्ताह से अक्टूबर के पहले सप्ताह तक बुआई करना उपयुक्त माना जाता है। वहीं, सिंचित क्षेत्रों में अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े से नवंबर के पहले सप्ताह तक बुआई पूरी कर लेनी चाहिए। सही समय पर बुआई करने से पौधों की वृद्धि अच्छी होती है और उत्पादन भी बेहतर मिलता है।

बीजोपचार और रोपण तकनीक

अच्छी फसल के लिए बीजोपचार जरूरी होता है। चीकू के बीजों को बोने से पहले 4 से 5 घंटे तक पानी में भिगोकर सीड प्राइमिंग करनी चाहिए। इसके बाद ट्राइकोडर्मा और वीटावैक्स जैसे फफूंदनाशकों से बीज उपचार करना लाभदायक होता है। इसके अलावा राइजोबियम कल्चर का उपयोग भी किया जा सकता है, जिससे पौधों की जड़ों का विकास बेहतर होता है। सही बीजोपचार से पौधे रोगमुक्त रहते हैं और उत्पादन में वृद्धि होती है।

सिंचाई और देखभाल

चीकू की खेती में उचित सिंचाई बेहद आवश्यक है। जब पौधों में फल बनने लगते हैं, तो सर्दियों में लगभग 30 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। वहीं गर्मियों में 15 दिनों के अंतराल पर पानी देना जरूरी होता है। नियमित सिंचाई और सही देखभाल से पौधे स्वस्थ रहते हैं और फल की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। साथ ही, खेत में जलभराव से बचना चाहिए, क्योंकि इससे जड़ों को नुकसान हो सकता है।

पैदावार और मुनाफे की संभावना

पॉवर ट्रैक यूरो 439 शौर्य: 39 एचपी श्रेणी में सबसे दमदार ट्रैक्टर

पॉवरट्रैक यूरो 439 शौर्य: एक बेहद शानदार और उत्तम ट्रैक्टर

पॉवरट्रैक का यूरो 439 शौर्य ट्रैक्टर भारतीय किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया एक भरोसेमंद और दमदार मॉडल है। यह ट्रैक्टर 39 HP श्रेणी में आता है और खेती के विभिन्न कार्यों के लिए उपयुक्त माना जाता है। छोटे और मध्यम किसानों के बीच इसकी लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है क्योंकि यह कम लागत में बेहतरीन प्रदर्शन प्रदान करता है। ट्रैक्टर की मजबूत बॉडी, आधुनिक फीचर्स और शानदार माइलेज इसे खेतों में अधिक उपयोगी बनाते हैं। पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य को इस तरह डिजाइन किया गया है कि किसान इसे खेती, ट्रॉली खींचने, जुताई, बुवाई और अन्य कृषि कार्यों में आसानी से इस्तेमाल कर सकें। इसकी मजबूत निर्माण गुणवत्ता लंबे समय तक टिकाऊ प्रदर्शन सुनिश्चित करती है। आधुनिक तकनीक और बेहतर इंजन क्षमता के कारण यह ट्रैक्टर ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों की पहली पसंद बनता जा रहा है।

शक्तिशाली इंजन और शानदार परफॉर्मेंस

पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य में 3 सिलेंडर वाला शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो बेहतरीन प्रदर्शन प्रदान करता है। यह ट्रैक्टर 39 HP की क्षमता के साथ आता है, जिससे किसान कठिन कृषि कार्यों को भी आसानी से पूरा कर सकते हैं। इसका PTO HP 34.5 है, जो रोटावेटर, थ्रेशर और अन्य कृषि उपकरणों को सुचारू रूप से चलाने में मदद करता है। ट्रैक्टर का 162 NM टॉर्क इसे भारी लोड उठाने और कठिन परिस्थितियों में बेहतर प्रदर्शन देने में सक्षम बनाता है। इंजन की तकनीक इस तरह विकसित की गई है कि यह कम ईंधन में अधिक शक्ति उत्पन्न करता है। यही कारण है कि किसान इसे किफायती और ईंधन बचाने वाला ट्रैक्टर मानते हैं। लंबे समय तक लगातार काम करने के बाद भी इंजन की क्षमता स्थिर बनी रहती है। खेतों में गहरी जुताई और ट्रॉली खींचने जैसे कार्यों में यह ट्रैक्टर शानदार प्रदर्शन देता है।

ट्रांसमिशन और गियर बॉक्स सिस्टम

पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य में Constant Mesh और Center Shift ट्रांसमिशन सिस्टम दिया गया है, जो ट्रैक्टर को स्मूद और आरामदायक ड्राइविंग अनुभव प्रदान करता है। इसमें 8 Forward + 2 Reverse गियर बॉक्स मिलता है, जिससे किसान अपनी जरूरत के अनुसार गति का चयन कर सकते हैं। ट्रैक्टर की अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 35.8 kmph है, जो सड़क और खेत दोनों जगह तेज और बेहतर संचालन में सहायता करती है। पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य का गियर सिस्टम काफी मजबूत और टिकाऊ है, जिससे लंबे समय तक उपयोग करने पर भी परेशानी कम होती है। इसमें Single और Dual Clutch दोनों विकल्प दिए गए हैं। ड्यूल क्लच विकल्प PTO कार्यों के दौरान अधिक सुविधा देता है और उपकरणों को बिना रुकावट चलाने में मदद करता है। ट्रांसमिशन सिस्टम की गुणवत्ता ट्रैक्टर की कार्यक्षमता को बढ़ाती है और चालक को बेहतर नियंत्रण प्रदान करती है।

ब्रेकिंग सिस्टम और स्टीयरिंग फीचर्स

पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य ट्रैक्टर में Oil Immersed Brakes दिए गए हैं, जो सुरक्षित और प्रभावी ब्रेकिंग प्रदान करते हैं। ऑयल इमर्सेड ब्रेक सामान्य ब्रेक की तुलना में अधिक टिकाऊ होते हैं और कम गर्म होते हैं, जिससे उनकी लाइफ बढ़ जाती है। खेतों और ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर काम करते समय मजबूत ब्रेकिंग सिस्टम चालक को बेहतर नियंत्रण देता है। पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य ट्रैक्टर में Power Steering और Mechanical Steering दोनों विकल्प उपलब्ध हैं। पावर स्टीयरिंग ट्रैक्टर को कम मेहनत में आसानी से मोड़ने में मदद करता है, जिससे लंबे समय तक काम करने पर थकान कम होती है। वहीं मैकेनिकल स्टीयरिंग उन किसानों के लिए उपयोगी है जो कम लागत वाला विकल्प चाहते हैं। बेहतर स्टीयरिंग सिस्टम ट्रैक्टर को छोटे खेतों और संकरे रास्तों में भी आसानी से चलाने में मदद करता है।

हाइड्रोलिक क्षमता और उपयोगिता

पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य की वजन उठाने की क्षमता 1600 किलोग्राम है, जो इसे भारी कृषि उपकरणों के लिए उपयुक्त बनाती है। किसान इस ट्रैक्टर के साथ रोटावेटर, कल्टीवेटर, प्लाऊ, सीड ड्रिल और ट्रॉली जैसे उपकरण आसानी से उपयोग कर सकते हैं। इसकी मजबूत हाइड्रोलिक प्रणाली तेज और सटीक कार्य सुनिश्चित करती है। ट्रैक्टर की 2 WD प्रणाली सामान्य खेती और परिवहन कार्यों के लिए काफी उपयोगी मानी जाती है। खेतों में भारी लोड उठाने के दौरान भी यह ट्रैक्टर संतुलन बनाए रखता है। हाइड्रोलिक कंट्रोल सिस्टम इतना प्रभावी है कि उपकरणों को आसानी से ऊपर-नीचे किया जा सकता है। इसकी मजबूत संरचना कठिन मिट्टी और भारी कार्यों में भी शानदार प्रदर्शन देती है। यही कारण है कि यह ट्रैक्टर खेती के कई प्रकार के कार्यों के लिए उपयुक्त माना जाता है।

आरामदायक डिजाइन और आधुनिक तकनीक

पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य का डिजाइन आकर्षक और मजबूत है। ट्रैक्टर की बॉडी को आधुनिक लुक दिया गया है, जिससे यह देखने में भी शानदार लगता है। चालक के लिए आरामदायक सीट दी गई है, जिससे लंबे समय तक काम करने में सुविधा मिलती है। इसका चौड़ा प्लेटफॉर्म चालक को पर्याप्त जगह प्रदान करता है। सभी कंट्रोल लीवर ऐसी स्थिति में लगाए गए हैं कि चालक आसानी से उनका उपयोग कर सके। ट्रैक्टर में बेहतर हेडलाइट्स और मजबूत फेंडर दिए गए हैं, जिससे रात में काम करना आसान हो जाता है। पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य ट्रैक्टर की मजबूत धातु बॉडी लंबे समय तक टिकाऊ रहती है और कठिन परिस्थितियों में भी खराब नहीं होती। आधुनिक तकनीक और बेहतर डिजाइन के कारण यह ट्रैक्टर किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

वारंटी और रखरखाव

पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य पर कंपनी 5 वर्ष की वारंटी प्रदान करती है, जो किसानों के लिए भरोसे का प्रतीक है। लंबी वारंटी अवधि ट्रैक्टर की गुणवत्ता और टिकाऊपन को दर्शाती है। इस ट्रैक्टर के स्पेयर पार्ट्स आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं, जिससे रखरखाव में परेशानी नहीं होती। इसका मेंटेनेंस खर्च भी काफी किफायती माना जाता है। इंजन और ट्रांसमिशन की मजबूत गुणवत्ता के कारण बार-बार मरम्मत की आवश्यकता कम पड़ती है। नियमित सर्विस कराने पर यह ट्रैक्टर कई वर्षों तक बेहतरीन प्रदर्शन देता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पावरट्रैक की सर्विस नेटवर्क अच्छी होने के कारण किसानों को सर्विस और पार्ट्स आसानी से मिल जाते हैं। इसकी अच्छी रीसेल वैल्यू भी किसानों के लिए एक बड़ा फायदा साबित होती है।

पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य कीमत

भारत में पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹6.00 लाख से ₹6.50 लाख के बीच है। अलग-अलग राज्यों और शहरों में कीमत में थोड़ा अंतर हो सकता है। इस कीमत में मिलने वाले फीचर्स और प्रदर्शन को देखते हुए यह ट्रैक्टर किसानों के लिए एक किफायती और लाभदायक विकल्प माना जाता है।

निष्कर्ष

पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य 39 HP श्रेणी में यह ट्रैक्टर शक्ति, माइलेज और टिकाऊपन का बेहतरीन संतुलन प्रदान करता है। खेती के साथ-साथ परिवहन कार्यों में भी इसका उपयोग आसानी से किया जा सकता है। मजबूत इंजन, बेहतर हाइड्रोलिक क्षमता और आधुनिक फीचर्स इसे एक भरोसेमंद ट्रैक्टर बनाते हैं। जो किसान कम बजट में दमदार और टिकाऊ ट्रैक्टर खरीदना चाहते हैं, उनके लिए पावरट्रैक यूरो 439 शौर्य एक शानदार विकल्प साबित हो सकता है।

भारत के टॉप 5 हैरो - जानें, कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

जानें, भारत के टॉप 5 हैरो की पूरी जानकारी

खेती में बेहतर उत्पादन के लिए खेत की सही तैयारी

बेहद जरूरी मानी जाती है। मिट्टी को भुरभुरा बनाना, खरपतवार हटाना, खेत को समतल करना और बुवाई के लिए उपयुक्त सीडबेड तैयार करना ऐसे काम हैं, जिनमें हैरो (Harrow) महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधुनिक कृषि में हैरो का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है, क्योंकि यह कम समय में अधिक क्षेत्र की जुताई करने में मदद करता है। भारत में कई कंपनियां अलग-अलग जरूरतों के अनुसार मजबूत और आधुनिक हैरो तैयार कर रही हैं, जो छोटे से लेकर बड़े किसानों तक के लिए उपयोगी साबित हो रहे हैं। अलग-अलग HP क्षमता, डिस्क डिजाइन और उन्नत तकनीक के कारण किसान अपनी खेती और मिट्टी के अनुसार सही हैरो का चयन कर सकते हैं।

सोनालिका हैरो: मजबूत डिजाइन और बेहतरीन जुताई का भरोसेमंद विकल्प

सोनालिका का हैरो किसानों के बीच अपनी मजबूत बनावट और प्रभावी कार्यक्षमता के लिए काफी लोकप्रिय माना जाता है। यह उपकरण खेत की मिट्टी को भुरभुरा बनाने और समतल करने में अहम भूमिका निभाता है। सोनालिका हैरो 30 HP से लेकर 100 HP तक के ट्रैक्टरों के साथ आसानी से काम कर सकता है, जिससे यह छोटे और बड़े दोनों प्रकार के किसानों के लिए उपयुक्त बन जाता है। कंपनी ने इसे 12 से 24 डिस्क तक के कई मॉडल्स में उपलब्ध कराया है, ताकि किसान अपनी जरूरत और खेत के आकार के अनुसार सही मॉडल चुन सकें।इस हैरो में आगे की तरफ नॉच्ड डिस्क और पीछे की तरफ प्लेन डिस्क का संयोजन दिया गया है। यह डिजाइन मिट्टी को काटने, पलटने और ढेलों को तोड़ने में काफी मददगार साबित होता है। सूखी और कठोर जमीन में भी यह मशीन प्रभावी तरीके से काम करती है। बुवाई से पहले खेत तैयार करने, खरपतवार हटाने और मिट्टी को नरम बनाने जैसे कार्यों में इसका उपयोग काफी फायदेमंद माना जाता है। SLMDH-12, SLMDH-14, SLMDH-16, SLMDH-19, SLMDH-20, SLMDH-22 और SLMDH-24 इसके प्रमुख मॉडल्स हैं, जो किसानों की अलग-अलग जरूरतों को पूरा करते हैं।

शक्तिमान पावर हैरो: एडवांस तकनीक के साथ गहरी जुताई की क्षमता

शक्तिमान का पावर हैरो आधुनिक खेती के लिए एक उन्नत कृषि उपकरण माना जाता है। यह मशीन मिट्टी को गहराई तक तोड़ने और बेहतरीन सीडबेड तैयार करने के लिए जानी जाती है। 35 HP से 115 HP तक के ट्रैक्टरों के साथ काम करने वाला यह हैरो खासतौर पर आलू, प्याज और अन्य बागवानी फसलों के लिए काफी उपयोगी माना जाता है। इसकी गहरी जुताई क्षमता लगभग 11 इंच तक होती है, जिससे कठोर मिट्टी भी आसानी से नरम हो जाती है। इस मशीन की सबसे खास बात इसके वर्टिकल ब्लेड हैं, जो मिट्टी को बिना पलटे ही उसे भुरभुरा बना देते हैं। इससे मिट्टी की नमी लंबे समय तक बनी रहती है और बीज अंकुरण के लिए बेहतर वातावरण तैयार होता है। शक्तिमान पावर हैरो में बोरॉन स्टील से बने मजबूत ब्लेड दिए जाते हैं, जो लंबे समय तक चलते हैं और कम घिसते हैं। यह मशीन जुताई, मिट्टी तोड़ने और समतलीकरण जैसे कई कार्य एक साथ कर सकती है, जिससे समय और ईंधन दोनों की बचत होती है। रेगुलर, H-160 और E-120 इसके लोकप्रिय मॉडल्स माने जाते हैं।

फील्डकिंग हैरो: मजबूत डिस्क और कम रखरखाव वाला कृषि उपकरण

फील्डकिंग का हैरो भारतीय किसानों के बीच अपनी मजबूती और टिकाऊ प्रदर्शन के लिए काफी प्रसिद्ध है। यह मशीन मिट्टी की जुताई, कंकड़-पत्थर हटाने और बेहतर सीडबेड तैयार करने में प्रभावी मानी जाती है। 30 HP से 100 HP तक के ट्रैक्टरों के लिए उपयुक्त यह हैरो 14 से 20 डिस्क वाले कई मॉडल्स में उपलब्ध है। फील्डकिंग हैरो में बोरॉन स्टील डिस्क का उपयोग किया जाता है, जिससे इसकी मजबूती और कार्यक्षमता बढ़ जाती है। यह कठिन और पथरीली जमीन में भी आसानी से काम

mahindra Rise

महिंद्रा ट्रैक्टर्स

टफ़ हरदम

महिंद्रा YUVRAJ 215 NXT NT

स्मार्ट। स्ट्रॉन्ग। इंटरकल्चर खेती के लिए उपयुक्त

सही उपयोग:

- कल्टिव्हेशन
- रोटावेटिंग
- स्प्रेईंग

कर सकता है। इसके जरिए किसान खेत से खरपतवार को जड़ से खत्म कर सकते हैं और मिट्टी में नमी बनाए रखने में भी मदद मिलती है। इसके यूपी मॉडल, टेंडेम डिस्क हैरो और दबंग हैरो जैसे मॉडल किसानों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। इसके स्पेयर पार्ट्स भी आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं, जिससे रखरखाव में ज्यादा परेशानी नहीं होती।

महिंद्रा हैरो: प्राथमिक जुताई के लिए दमदार विकल्प

महिंद्रा का हैरो अपनी मजबूत फ्रेम और शानदार जुताई क्षमता के कारण किसानों के बीच भरोसेमंद माना जाता है। यह विशेष रूप से 35 HP से 55 HP ट्रैक्टरों के लिए डिजाइन किया गया है और मिट्टी को भुरभुरा बनाने, फसल अवशेषों को काटने तथा खरपतवार हटाने में काफी मददगार साबित होता है। महिंद्रा हैरो में मजबूत नॉच्ड डिस्क दिए गए हैं, जो मिट्टी में गहराई तक प्रवेश कर उसे अच्छी तरह तोड़ते हैं। इसकी एडजस्टेबल डिस्क सुविधा किसानों को अलग-अलग मिट्टी के अनुसार मशीन की सेटिंग बदलने की सुविधा देती है। इसमें लगे स्क्रैपर डिस्क पर चिपकी मिट्टी को स्वतः साफ करते रहते हैं, जिससे मशीन की कार्यक्षमता बनी रहती है। यह उपकरण प्राथमिक जुताई के लिए काफी उपयुक्त माना जाता है और सामान्य कल्टीवेटर की तुलना में बेहतर परिणाम देता है।

फार्मकिंग हैरो: भारी मिट्टी और कठिन खेती कार्यों के लिए मजबूत मशीन

फार्मकिंग अपने मजबूत और टिकाऊ कृषि उपकरणों के लिए किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। कंपनी की कॉम्पैक्ट डिस्क हैरो सीरीज में FK-CDH16, FK-CDH18, FK-CDH20, FK-CDH22 और FK-CDH24 जैसे मॉडल शामिल हैं, जिन्हें कठिन मिट्टी और भारी कृषि कार्यों के लिए तैयार किया गया है। इन सभी मॉडलों में 100×100 मिमी का मजबूत स्क्वायर ट्यूबुलर फ्रेम दिया गया है, जो मशीन को अधिक टिकाऊ और स्थिर बनाता है। इसके अलावा 32 मिमी का सॉलिड स्क्वायर रॉड गैंग बोल्ट और मजबूत एक्सल मशीन को बेहतर संतुलन प्रदान करते हैं। फ्रंट गैंग में नॉच्ड डिस्क और रियर गैंग में प्लेन डिस्क का संयोजन मिट्टी की प्रभावी कटाई और समतलीकरण में मदद करता है। अलग-अलग डिस्क संख्या और कटिंग चौड़ाई के कारण किसान अपनी खेती और जमीन के अनुसार उपयुक्त मॉडल चुन सकते हैं। भारी वजन और मजबूत बेयरिंग हब की वजह से यह डिस्क हैरो कम समय में बड़े क्षेत्र की प्रभावी जुताई करने में सक्षम माना जाता है।

मैसी फर्ग्यूसन स्मार्ट सीरीज के टॉप 3 ट्रैक्टर - जानें, कीमत और स्पेसिफिकेशन्स

जानें, मैसी फर्ग्यूसन स्मार्ट सीरीज के टॉप 3 ट्रैक्टर की पूरी जानकारी

मैसी फर्ग्यूसन भारत के सबसे भरोसेमंद ट्रैक्टर ब्रांड्स में से एक माना जाता है। यह कंपनी अपने मजबूत इंजन, बेहतर माइलेज, आधुनिक तकनीक और टिकाऊ ट्रैक्टरों के लिए किसानों के बीच काफी

लोकप्रिय है। मैसी फर्ग्यूसन के ट्रैक्टर खेती के हर प्रकार के कार्य जैसे जुताई, बुवाई, रोटावेटर चलाना, ट्रॉली खींचना और थ्रेशिंग आदि में शानदार प्रदर्शन करते हैं। कंपनी अलग-अलग HP श्रेणी में ट्रैक्टर उपलब्ध कराती है, जिससे छोटे, मध्यम और बड़े किसान अपनी जरूरत के अनुसार सही मॉडल चुन सकते हैं। नीचे मैसी फर्ग्यूसन के कुछ लोकप्रिय और दमदार ट्रैक्टर मॉडलों की जानकारी दी गई है।

1. मैसी फर्ग्यूसन 9500 स्मार्ट

मैसी फर्ग्यूसन 9500 Smart एक शक्तिशाली और आधुनिक ट्रैक्टर है, जिसे कठिन कृषि कार्यों को आसानी से पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है। इस ट्रैक्टर में 3 सिलेंडर वाला 2700 CC इंजन दिया गया है, जो 58 HP की ताकत प्रदान करता है। इसकी 56 HP PTO पावर रोटावेटर, थ्रेशर और अन्य भारी कृषि उपकरणों को बेहतर तरीके से चलाने में मदद करती है। ट्रैक्टर में Comfimesh ट्रांसमिशन दिया गया है, जिससे गियर शिफ्टिंग काफी स्मूद और आरामदायक हो जाती है। इसमें 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स और 8 फॉरवर्ड + 8 रिवर्स गियर विकल्प उपलब्ध हैं, जो खेत और सड़क दोनों जगह बेहतरीन नियंत्रण प्रदान करते हैं। इस ट्रैक्टर में ऑयल इमर्स्ड डिस्क ब्रेक दिए गए हैं, जो अधिक सुरक्षा और लंबे समय तक टिकाऊ प्रदर्शन सुनिश्चित करते हैं। इसकी 2050 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता भारी कृषि उपकरणों को आसानी से उठाने और संचालित करने में सक्षम बनाती है। ट्रैक्टर में आगे 7.5 x 16 और पीछे 16.9 x 28 आकार के मजबूत टायर दिए गए हैं, जो खेतों में बेहतर पकड़ और संतुलन बनाए रखते हैं। भारत में इसकी कीमत लगभग ₹9.66 लाख से ₹10.05 लाख तक रखी गई है। कंपनी इस मॉडल पर 5000 घंटे या 5 साल की वारंटी भी प्रदान करती है, जो इसकी गुणवत्ता और भरोसेमंद प्रदर्शन को दर्शाती है।

2. मैसी फर्ग्यूसन 245 स्मार्ट

मैसी फर्ग्यूसन 245 Smart मध्यम श्रेणी का एक लोकप्रिय ट्रैक्टर है, जो खेती के दैनिक कार्यों के लिए बेहद उपयुक्त माना जाता है। इसमें 3 सिलेंडर वाला 2700 CC इंजन दिया गया है, जो 46 HP की ताकत उत्पन्न करता है। इसकी 39 HP PTO पावर रोटावेटर, थ्रेशर, पंपसेट और अन्य कृषि उपकरणों को आसानी से चलाने में सहायता करती है। यह ट्रैक्टर खेतों के छोटे और बड़े दोनों प्रकार के कार्यों को कुशलता से पूरा करने में सक्षम है। इस मॉडल में ड्यूल क्लच और पार्शियल कांस्टेंट मेश ट्रांसमिशन दिया गया है, जिससे गियर बदलना आसान और आरामदायक हो जाता है। ट्रैक्टर में 10 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर का विकल्प मिलता है, जो बेहतर स्पीड नियंत्रण प्रदान करता है। इसमें 47 लीटर क्षमता का फ्यूल टैंक दिया गया है, जिससे लंबे समय तक बिना रुके काम किया जा सकता है। इसकी 1700 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता भारी कृषि उपकरणों को संभालने में मदद करती है। ट्रैक्टर में आगे 6.00 x 16 और पीछे 13.6 x 28 या 14.9 x 28 आकार के टायर दिए गए हैं, जो खेतों में अच्छी पकड़ और स्थिरता प्रदान करते हैं। भारत में इसकी कीमत लगभग ₹7.81 लाख से ₹8.13 लाख तक है। कंपनी इस ट्रैक्टर पर भी 5000 घंटे या 5 साल की वारंटी देती है, जिससे किसानों को लंबे समय तक भरोसेमंद प्रदर्शन मिलता है।

3. मैसी फर्ग्यूसन 9563 ट्रेम IV

मैसी फर्ग्यूसन 9563 Trem IV एक प्रीमियम और हाई-परफॉर्मेंस ट्रैक्टर है, जिसे बड़े कृषि कार्यों और भारी उपकरणों के उपयोग के लिए तैयार किया गया है। इसमें 3 सिलेंडर वाला 63 HP इंजन दिया गया है, जो 2000 RPM पर शानदार कार्यक्षमता प्रदान करता है। इसका अधिकतम टॉर्क 275 Nm है, जिससे ट्रैक्टर कठिन परिस्थितियों में भी दमदार प्रदर्शन करता है। इसकी 53 HP PTO पावर रोटावेटर, हैरो, थ्रेशर और अन्य भारी कृषि उपकरणों को आसानी से संचालित करने में मदद करती है।
इस ट्रैक्टर में स्प्लिट टॉर्क क्लच और पार्शियल सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन दिया गया है, जिससे गियर बदलना काफी आसान और स्मूद हो जाता है। इसमें

12 फॉरवर्ड + 4 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जो खेत और सड़क दोनों जगह बेहतर नियंत्रण और गति प्रदान करते हैं। ट्रैक्टर में 65 लीटर क्षमता का बड़ा फ्यूल टैंक दिया गया है, जिससे लंबे समय तक काम करना आसान हो जाता है। इसकी 2500 किलोग्राम लिफ्टिंग क्षमता भारी कृषि उपकरणों को आसानी से संभालने में सक्षम बनाती है।इस मॉडल में आगे 7.50 x 16 और पीछे 16.9 x 28 आकार के बड़े और मजबूत टायर दिए गए हैं, जो खेतों में बेहतर पकड़ और संतुलन बनाए रखते हैं। भारत में इसकी कीमत लगभग ₹9.26 लाख से ₹9.64 लाख तक रखी गई है, हालांकि अलग-अलग राज्यों में कीमतों में थोड़ा अंतर हो सकता है।

मैसी फर्ग्यूसन के ये तीनों ट्रैक्टर मॉडल अपनी-अपनी श्रेणी में बेहतरीन प्रदर्शन, मजबूत इंजन और आधुनिक फीचर्स के लिए जाने जाते हैं। मैसी फर्ग्यूसन 245 Smart छोटे और मध्यम किसानों के लिए उपयुक्त विकल्प है, जबकि मैसी फर्ग्यूसन 9500 Smart और मैसी फर्ग्यूसन 9563 Trem IV बड़े कृषि कार्यों और भारी उपकरणों के लिए बेहतर माने जाते हैं। बेहतर माइलेज, मजबूत बॉडी, अधिक लिफ्टिंग क्षमता और लंबी वारंटी के कारण ये ट्रैक्टर भारतीय किसानों के बीच काफी लोकप्रिय हैं।

बेस्ट 5 राइस ट्रांसप्लांटर: जानें कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

भारत में उपयोग किए जाने वाले 5 बेहतरीन राइस ट्रांसप्लांटर की पूरी जानकारी

भारत में धान की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है और मानसून के दौरान धान की रोपाई किसानों के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक होती है। पारंपरिक तरीके से हाथों द्वारा धान की रोपाई करना काफी मेहनत और समय लेने वाला काम है। इसके अलावा, मजदूरों की कमी और बढ़ती लागत के कारण किसानों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में राइस ट्रांसप्लांटर मशीनें किसानों के लिए आधुनिक और प्रभावी समाधान बनकर सामने आई हैं। ये मशीनें कम समय में अधिक क्षेत्र में सटीक और समान दूरी पर धान की रोपाई करने में मदद करती हैं, जिससे श्रम लागत कम होती है और उत्पादन में सुधार होता है। आज बाजार में कई कंपनियों की राइस ट्रांसप्लांटर मशीनें उपलब्ध हैं, लेकिन कुछ मशीनें अपनी बेहतर कार्यक्षमता,

मजबूत डिजाइन और शानदार फीचर्स के कारण किसानों के बीच ज्यादा लोकप्रिय हैं। आइए जानते हैं भारत की 5 बेहतरीन राइस ट्रांसप्लांटर मशीनों के बारे में।

1. शक्तिमान राइस ट्रांसप्लांटर

शक्तिमान राइस ट्रांसप्लांटर भारतीय खेती की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार की गई चार-पंक्ति वाली धान रोपाई मशीन है। यह मशीन मैदानी क्षेत्रों के साथ-साथ पहाड़ी इलाकों में भी आसानी से कार्य कर सकती है। इसकी मजबूत बॉडी और सरल संचालन प्रणाली इसे किसानों के बीच लोकप्रिय बनाती है। यह मशीन लगभग 4 एचपी की शक्ति के साथ काम करती है और इसका वजन लगभग 190 किलोग्राम है। इसकी रोपाई गति 0.3 से 0.7 मीटर प्रति सेकंड तक होती है। कम ईंधन खपत और बेहतर कार्यक्षमता के कारण यह छोटे और मध्यम किसानों के लिए एक किफायती और भरोसेमंद विकल्प मानी जाती है।

प्रमुख फीचर्स

- 4-पंक्ति रोपाई प्रणाली
- आसान संचालन और मजबूत डिजाइन
- कम ईंधन खपत
- पहाड़ी और मैदानी दोनों क्षेत्रों के लिए उपयुक्त

2. वीएसटी राइस ट्रांसप्लांटर

VST 8 रो पैडी ट्रांसप्लांटर एक आधुनिक मशीन है, जो एक साथ आठ पंक्तियों में धान की रोपाई करने की क्षमता रखती है। यह मशीन विशेष रूप से उन किसानों के लिए उपयोगी है जो कम समय में अधिक क्षेत्र में रोपाई करना चाहते हैं। मानसून के दौरान तेजी से काम करने की इसकी क्षमता किसानों को श्रमिकों की कमी से राहत देती है। इसकी 5 एचपी शक्ति और लगभग 305 किलोग्राम वजन इसे मजबूत और टिकाऊ बनाते हैं। यह मशीन 0.44 से 0.54 मीटर प्रति सेकंड की गति से रोपाई करती है और पंक्तियों के बीच 238 मिमी की दूरी बनाए रखती है।

प्रमुख फीचर्स

- 8-पंक्ति रोपाई क्षमता
- तेज और सटीक रोपाई
- बड़े खेतों के लिए उपयुक्त
- मजबूत और टिकाऊ बॉडी

3. खेदूत राइस ट्रांसप्लांटर

खेदुत Kart-8 एक आठ-पंक्ति वाली राइड-ऑन धान रोपाई मशीन है, जिसे बड़े खेतों के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया है। यह मशीन कम समय में बड़े क्षेत्र में व्यवस्थित और तेज रोपाई करने में सक्षम है। इसकी सहायता से किसान श्रम और समय दोनों की बचत कर सकते हैं। लगभग 305 किलोग्राम वजन वाली यह मशीन 238 मिमी पंक्ति दूरी बनाए रखते हुए 0.44 से 0.54 मीटर प्रति सेकंड की गति से कार्य करती है। बड़े पैमाने पर धान की खेती करने वाले किसानों के लिए यह मशीन बेहद उपयोगी साबित होती है।

प्रमुख फीचर्स

- राइड-ऑन सिस्टम
- बड़े खेतों में तेज कार्यक्षमता
- श्रम और समय की बचत
- समान दूरी पर रोपाई

4. कुबोटा राइस ट्रांसप्लांटर

कुबोटा KNP-6W एक आधुनिक छह-पंक्ति वाली वॉक-बिहाइंड राइस ट्रांसप्लांटर मशीन है, जिसे जापानी तकनीक के आधार पर विकसित किया गया है। यह मशीन छोटे और मध्यम आकार के खेतों के लिए बेहद उपयुक्त मानी जाती है। इसका हल्का वजन और उपयोगकर्ता के अनुकूल डिज़ाइन किसानों को आसानी से संचालन करने में मदद करते हैं। यह मशीन तेज गति से रोपाई करने में सक्षम है और खेत में पौधों की समान दूरी बनाए रखती है, जिससे उत्पादन में सुधार होता है। इसकी 5.5 एचपी की शक्ति और 10 लीटर की टैंक क्षमता इसे लंबे समय तक लगातार कार्य करने योग्य बनाती हैं। लगभग 189 किलोग्राम वजन वाली यह मशीन 0.47 से 0.85 मीटर प्रति सेकंड की गति से रोपाई कर सकती है।

प्रमुख फीचर्स

- जापानी तकनीक पर आधारित डिजाइन
- 6-पंक्ति रोपाई क्षमता
- हल्का और उपयोग में आसान
- बेहतर उत्पादन के लिए समान रोपाई

5. महिंद्रा राइस ट्रांसप्लांटर

महिंद्रा MP 461 एक भरोसेमंद चार-पंक्ति वाली धान रोपाई मशीन है, जिसे आसान संचालन और बेहतर प्रदर्शन के लिए डिजाइन किया गया है। इसमें चौड़ी फीडर बेल्ट प्रणाली दी गई है, जो पौधों की समान रोपाई सुनिश्चित करती है। यह मशीन विभिन्न प्रकार की मिट्टी में प्रभावी ढंग से कार्य कर सकती है और छोटे से लेकर बड़े खेतों तक के लिए उपयुक्त है। इसकी 3.9 एचपी की क्षमता और 192 किलोग्राम वजन इसे संतुलित और मजबूत बनाते हैं। यह मशीन 0.4 से 0.84 मीटर प्रति सेकंड की गति से रोपाई करने में सक्षम है।

प्रमुख फीचर्स

- चौड़ी फीडर बेल्ट प्रणाली
- आसान संचालन
- विभिन्न प्रकार की मिट्टी में बेहतर प्रदर्शन
- छोटे और बड़े खेतों के लिए उपयुक्त

राइस ट्रांसप्लांटर मशीनों के फायदे

श्रम और समय की बचत - धान रोपाई मशीनें कम समय में बड़े क्षेत्र में काम कर सकती हैं, जिससे किसानों को श्रमिकों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

एकसमान रोपाई - मशीनों द्वारा पौधों की समान दूरी और गहराई पर रोपाई होती है, जिससे फसल की वृद्धि बेहतर होती है।

उत्पादन में वृद्धि - सही दूरी और समय पर रोपाई होने से फसल का उत्पादन बढ़ता है और पौधों को पर्याप्त पोषण मिलता है।

लागत में कमी - हालांकि मशीनों की शुरुआती लागत अधिक हो सकती है, लेकिन लंबे समय में ये श्रम लागत और समय दोनों की बचत करती हैं।

धान की खेती में आधुनिक राइस ट्रांसप्लांटर मशीनें किसानों के लिए समय, श्रम और लागत बचाने का प्रभावी माध्यम बन चुकी हैं। शक्तिमान, वीएसटी, खेदूत, कुबोटा और महिंद्रा जैसी कंपनियों की मशीनें अपनी मजबूत कार्यक्षमता, बेहतर फीचर्स और आसान संचालन के कारण किसानों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। छोटे किसानों से लेकर बड़े खेतों में खेती करने वाले किसान अपनी जरूरत और बजट के अनुसार इन मशीनों का चयन कर सकते हैं। सही राइस ट्रांसप्लांटर का उपयोग न केवल रोपाई को तेज और आसान बनाता है, बल्कि फसल की गुणवत्ता और उत्पादन बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पौधारोपण और फेंसिंग के लिए किसानों की मददगार मशीन पोस्ट होल डिगर

आज की आधुनिक खेती में समय पर कृषि कार्य पूरा करना किसानों के लिए बेहद जरूरी हो गया है। चाहे खेत में पौधारोपण करना हो, फेंसिंग लगानी हो या खंभे गाड़ने का काम करना हो, गड्ढे खोदने में काफी मेहनत और समय लगता है। पारंपरिक तरीके से

मजदूरों द्वारा खुदाई करने में ज्यादा श्रम, अधिक खर्च और लंबा समय लगता है। ऐसे में पोस्ट होल डिगर किसानों के लिए एक उपयोगी और समय बचाने वाली कृषि मशीन बनकर उभरी है। यह मशीन कम समय में अधिक संख्या में गड्ढे तैयार कर देती है, जिससे खेती के कई कार्य आसान हो जाते हैं। बागवानी और खेत सुरक्षा से जुड़े कार्यों में इसकी मांग लगातार बढ़ रही है।

क्या है पोस्ट होल डिगर मशीन

पोस्ट होल डिगर एक विशेष कृषि मशीन है, जिसका उपयोग जमीन में गोल और गहरे गड्ढे खोदने के लिए किया जाता है। आमतौर पर इसे ट्रैक्टर के साथ जोड़ा जाता है और यह ट्रैक्टर के पीटीओ सिस्टम की सहायता से काम करती है। मशीन में लगा ऑगर ब्लेड तेजी से घूमता है और मिट्टी को काटते हुए कुछ ही मिनटों में तय आकार का गड्ढा तैयार कर देता है। यह मशीन अलग-अलग आकार के गड्ढे बनाने में सक्षम होती है। किसान अपनी जरूरत के अनुसार छोटे, मध्यम या बड़े आकार के ऑगर ब्लेड का चयन कर सकते हैं।

बागवानी और पौधारोपण में सबसे ज्यादा उपयोग

पोस्ट होल डिगर का सबसे अधिक उपयोग बागवानी और फलदार पौधों की रोपाई में किया जाता है। आम, अमरूद, नींबू, अनार, पपीता, नारियल, सहजन और अन्य फलों के पौधों के लिए सही दूरी और एक समान गहराई वाले गड्ढे जरूरी होते हैं। हाथ से खुदाई करने पर गड्ढों का आकार अलग-अलग हो सकता है, लेकिन पोस्ट होल डिगर की मदद से एक जैसे गड्ढे आसानी से तैयार किए जा सकते हैं। इससे पौधों की रोपाई बेहतर तरीके से होती है और बाग लगाने का काम भी तेजी से पूरा हो जाता है।

फेंसिंग और खंभे लगाने में उपयोगी मशीन

आजकल किसान खेतों की सुरक्षा के लिए तारबंदी और फेंसिंग पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। फेंसिंग के लिए बड़ी संख्या में गड्ढों की जरूरत पड़ती है, जिन्हें हाथ से खोदना कठिन और समय लेने वाला काम होता है। पोस्ट होल डिगर इस काम को बेहद आसान बना देता है। यह मशीन कुछ ही घंटों में कई गड्ढे तैयार कर सकती है, जिससे मजदूरों पर निर्भरता कम होती है और कार्य समय पर पूरा हो जाता है। इसके अलावा ड्रिप सिंचाई सिस्टम, शेड नेट हाउस और अन्य कृषि ढांचों के लिए खंभे लगाने में भी यह मशीन काफी उपयोगी साबित होती है।

समय और मजदूरी की बचत

पोस्ट होल डिगर का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह किसानों का समय और मजदूरी दोनों बचाता है। जहां मजदूरों की मदद से एक दिन में सीमित संख्या में गड्ढे खोदे जा सकते हैं, वहीं यह मशीन कुछ ही घंटों में दर्जनों गड्ढे तैयार कर देती है। बड़े स्तर पर बागवानी या फेंसिंग का कार्य करने वाले किसानों के लिए यह मशीन लागत कम करने में मददगार साबित होती है। कई किसान इसे किराये पर लेकर भी उपयोग करते हैं, जिससे बिना ज्यादा निवेश के भी इसका लाभ लिया जा सकता है।

किन किसानों के लिए ज्यादा फायदेमंद

यह मशीन विशेष रूप से उन किसानों के लिए लाभकारी मानी जाती है, जिनके खेतों में नियमित रूप से गड्ढे खोदने का काम होता है। फल और सब्जी उत्पादक किसान, नर्सरी संचालक, बड़े खेतों वाले किसान, फेंसिंग कराने वाले किसान, ड्रिप सिंचाई लगाने वाले किसान और ठेके पर कृषि कार्य करने वाले लोग इसके प्रमुख उपयोगकर्ता हैं। ऐसे किसानों के लिए पोस्ट होल डिगर खेती के कार्यों को तेज और आसान बना देता है।

पोस्ट होल डिगर खरीदते समय किन बातों का रखें ध्यान

पोस्ट होल डिगर खरीदने से पहले किसानों को कुछ जरूरी बातों का ध्यान रखना चाहिए। सबसे पहले ट्रैक्टर की एचपी क्षमता के अनुसार मशीन का चयन

करना जरूरी है। इसके अलावा मजबूत और टिकाऊ ऑगर ब्लेड वाली मशीन खरीदना बेहतर रहता है। किसानों को अपनी जरूरत के अनुसार गड्ढे का आकार चुनना चाहिए। अच्छी कंपनी और बेहतर सर्विस सुविधा वाली मशीन लेना लंबे समय तक फायदेमंद साबित होता है। साथ ही कीमत के साथ मिलने वाली वारंटी की जानकारी भी जरूर जांचनी चाहिए।

पोस्ट होल डिगर मशीन की कीमत

पोस्ट होल डिगर की कीमत उसके मॉडल, कंपनी, आकार और गुणवत्ता के अनुसार अलग-अलग होती है। सामान्य तौर पर इसकी कीमत लगभग 45 हजार रुपये से लेकर 1.50 लाख रुपये तक हो सकती है। हैवी ड्यूटी और बड़े मॉडल की कीमत इससे अधिक भी हो सकती है। छोटे किसान यदि इसे खरीदना नहीं चाहते, तो किराये पर लेकर भी इसका उपयोग कर सकते हैं।

बाजार में उपलब्ध प्रमुख कंपनियां और मॉडल

बाजार में कई प्रसिद्ध कंपनियां पोस्ट होल डिगर मशीन उपलब्ध करा रही हैं। नेप्च्यून, स्टिहल, फार्मकिंग और शक्तिमान जैसी कंपनियों के पोस्ट होल डिगर किसानों के बीच लोकप्रिय हैं।

आधुनिक खेती की जरूरत बन रही है यह मशीन

खेती में मशीनों का उपयोग लगातार बढ़ रहा है। मजदूरों की कमी और बढ़ती मजदूरी के कारण किसान अब आधुनिक कृषि उपकरणों की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। पोस्ट होल डिगर जैसी मशीनें खेती के कार्यों को आसान, तेज और कम खर्चीला बना रही हैं। यह मशीन कम समय में ज्यादा काम करने में मदद करती है और किसानों की उत्पादकता बढ़ाने में भी सहायक साबित होती है।

पोस्ट होल डिगर आज के समय में खेती के लिए बेहद उपयोगी और किफायती मशीन बन चुकी है। पौधारोपण, फेंसिंग, खंभे लगाने और अन्य कृषि कार्यों में यह किसानों का समय, मेहनत और खर्च तीनों कम करती है। जिन किसानों के खेतों में नियमित रूप से गड्ढे खोदने का काम होता है, उनके लिए यह मशीन एक अच्छा और लाभदायक निवेश साबित हो सकती है।

तोता कल्टीवेटर: गहरी जुताई के लिए सबसे बेहतरीन कल्टीवेटर

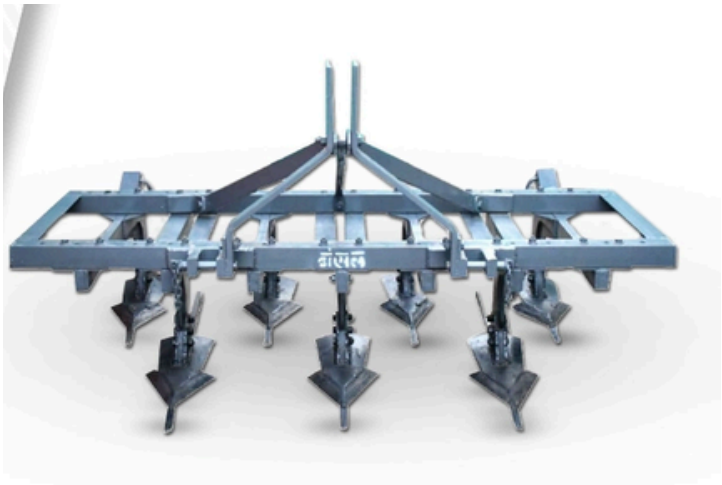

भारतीय खेती में खेत की अच्छी तैयारी फसल उत्पादन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा मानी जाती है। यदि मिट्टी की सही तरीके से जुताई की जाए, तो फसल की पैदावार बेहतर होती है और पौधों को पर्याप्त पोषण मिलता है। आधुनिक कृषि में किसानों के लिए कल्टीवेटर एक बेहद उपयोगी कृषि उपकरण बन चुका है, जो मिट्टी को भुरभुरा बनाने, खरपतवार हटाने और खेत को बुवाई के लिए तैयार करने में मदद करता है। इन्हीं आधुनिक कृषि उपकरणों में तोता कल्टीवेटर किसानों के बीच अपनी मजबूती, बेहतर प्रदर्शन और गहरी जुताई की क्षमता के कारण तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। यह कल्टीवेटर कठिन और सख्त मिट्टी में भी प्रभावी ढंग से कार्य करता है और कम समय में खेत की अच्छी तैयारी सुनिश्चित करता है।

तोता कल्टीवेटर क्या है?

तोता कल्टीवेटर, जिसे कई क्षेत्रों में तोता हल या तोता पंजा के नाम से भी जाना जाता है, एक मजबूत और उन्नत कृषि यंत्र है। इसका उपयोग मुख्य रूप से सख्त और पथरीली मिट्टी की गहरी जुताई करने, मिट्टी को भुरभुरा बनाने तथा खेत को बुवाई के लिए बेहतर तरीके से तैयार करने के लिए किया जाता है।

भारत में तोता कल्टीवेटर की कीमत

भारत में तोता कल्टीवेटर की कीमत आमतौर पर ₹35,000 से ₹55,000 के बीच होती है। इसकी कीमत मॉडल, फाल (Tyne) की संख्या, चौड़ाई और निर्माण गुणवत्ता के आधार पर अलग-अलग हो सकती है। बाजार में 7 से 9 फाल वाले मॉडल सबसे अधिक लोकप्रिय हैं, जो 35 से 50 HP क्षमता वाले ट्रैक्टरों के साथ आसानी से उपयोग किए जा सकते हैं। मजबूत फ्रेम और टिकाऊ डिजाइन के कारण ये कल्टीवेटर लंबे समय तक बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

लोकप्रिय तोता कल्टीवेटर मॉडल और कीमत

8 फीट तोता कल्टीवेटर

8 फीट चौड़ाई वाला तोता कल्टीवेटर किसानों के बीच काफी लोकप्रिय है। पंचाली और इंदौर जैसे ब्रांडों के मॉडल बाजार में अधिक मांग रखते हैं। यह मॉडल बड़े खेतों में तेजी से जुताई करने में सक्षम होता है और इसकी कीमत लगभग ₹42,000 से ₹45,000 तक होती है। यह मॉडल मध्यम और बड़े किसानों के लिए उपयुक्त माना जाता है।

7 फाल (7 Tyne) तोता हल

7 फाल वाला तोता कल्टीवेटर सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले मॉडलों में शामिल है। यह खेत की गहरी जुताई करने और मिट्टी को नरम बनाने में प्रभावी माना जाता है। इसकी कीमत लगभग ₹35,000 से ₹50,000 के बीच रहती है। यह मॉडल 35-50 HP ट्रैक्टरों के साथ आसानी से चलाया जा सकता है और कम ईंधन में बेहतर कार्य करता है।

2-in-1 फोल्डिंग तोता कल्टीवेटर

2-in-1 फोल्डिंग तोता कल्टीवेटर आधुनिक किसानों के लिए एक उन्नत विकल्प माना जाता है। इसका फोल्डिंग डिजाइन इसे उपयोग और परिवहन दोनों में सुविधाजनक बनाता है। यह मॉडल खेत की गहरी जुताई के साथ-साथ खरपतवार नियंत्रण में भी प्रभावी है। इसकी कीमत लगभग ₹43,000 से ₹52,000 तक होती है। बड़े खेतों और व्यावसायिक खेती करने वाले किसानों के लिए यह मॉडल काफी उपयोगी साबित होता है।

गहरी जुताई में तोता कल्टीवेटर के फायदे

मिट्टी को भुरभुरा बनाना

तोता कल्टीवेटर मिट्टी की ऊपरी और निचली परतों को अच्छी तरह मिलाकर उसे भुरभुरा बनाता है। इससे पौधों की जड़ें आसानी से फैलती हैं और फसल का विकास बेहतर होता है।

खरपतवार नियंत्रण

यह कल्टीवेटर खेत में मौजूद खरपतवारों को जड़ से हटाने में मदद करता है, जिससे फसल को पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा मिलती है और उत्पादन बढ़ता है।

मिट्टी में नमी बनाए रखना

गहरी जुताई करने से मिट्टी में पानी का संचय बेहतर होता है और खेत लंबे समय तक नमी बनाए रखता है। यह विशेष रूप से कम बारिश वाले क्षेत्रों के लिए फायदेमंद होता है।

खेत की बेहतर तैयारी

बुवाई से पहले खेत की सही तैयारी जरूरी होती है। तोता कल्टीवेटर कम समय में खेत को समतल और तैयार कर देता है, जिससे किसानों का समय और मेहनत दोनों बचते हैं।

किन किसानों के लिए उपयुक्त है?

तोता कल्टीवेटर छोटे, मध्यम और बड़े सभी प्रकार के किसानों के लिए उपयोगी है। विशेष रूप से वे किसान जो बड़े क्षेत्र में खेती करते हैं और कम समय में खेत तैयार करना चाहते हैं, उनके लिए यह एक बेहतरीन विकल्प माना जाता है।

तोता कल्टीवेटर आधुनिक खेती के लिए एक शक्तिशाली और उपयोगी कृषि उपकरण है, जो गहरी जुताई, मिट्टी सुधार और खरपतवार नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी मजबूत बनावट, बेहतर कार्यक्षमता और कम लागत में अधिक काम करने की क्षमता इसे किसानों के बीच लोकप्रिय बनाती है। यदि किसान खेत की बेहतर तैयारी और अधिक उत्पादन चाहते हैं, तो तोता कल्टीवेटर उनके लिए एक प्रभावी और लाभदायक विकल्प साबित हो सकता है।

बिजनेस आइडिया: ये 5 कृषि व्यवसाय देंगे बंपर मुनाफा

गांव में शुरू करें ये टॉप 5 कृषि बिजनेस - होगा अधिक लाभ

आज के समय में किसान केवल पारंपरिक खेती पर निर्भर रहकर ही नहीं, बल्कि कृषि से जुड़े अन्य व्यवसाय शुरू करके भी अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। कई ऐसे व्यवसाय हैं जिन्हें कम निवेश में शुरू किया जा सकता है और इनमें मुनाफा भी काफी अच्छा मिलता है। खास बात यह है कि इन कामों को खेती के साथ आसानी से किया जा सकता है। पशुपालन, पोल्ट्री, मछली पालन और मधुमक्खी पालन जैसे व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। सरकार भी किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए इन व्यवसायों पर लोन और सब्सिडी की सुविधा उपलब्ध करा रही है। आइए जानते हैं खेती के साथ शुरू किए जा सकने वाले ऐसे 5 फायदे वाले व्यवसायों के बारे में।

1. गाय - भैंस पालन व्यवसाय

Dairy Farming किसानों के लिए सबसे लाभदायक व्यवसायों में से एक माना जाता है। किसान अच्छी नस्ल की गाय या भैंस पालकर दूध उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। इसकी शुरुआत छोटे स्तर पर दो गाय या दो भैंस से भी की जा सकती है। दूध की लगातार बढ़ती मांग के कारण डेयरी व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों में कमाई का अच्छा माध्यम बन चुका है। यदि किसान बड़े स्तर पर डेयरी फार्म शुरू करना चाहते हैं, तो बैंक और कई सरकारी संस्थाएं इसके लिए लोन सुविधा भी प्रदान करती हैं। कई योजनाओं के तहत डेयरी व्यवसाय के लिए 5 लाख से 10 लाख रुपये तक का ऋण उपलब्ध कराया जाता है। इसके लिए आधार कार्ड, बिजली बिल, एनओसी, फोटो और अन्य जरूरी दस्तावेज जमा करने होते हैं। सत्यापन पूरा होने के बाद पशुओं की संख्या और डेयरी के आकार के अनुसार ऋण मंजूर किया जाता है। सरकार की ओर से कई योजनाओं में सब्सिडी का भी लाभ दिया जाता है।

2. मधुमक्खी पालन व्यवसाय

Beekeeping खेती के साथ किया जाने वाला एक बेहतरीन व्यवसाय माना जाता है। इसमें कम जगह और कम लागत में अच्छी कमाई की जा

सकती है। शहद की बढ़ती मांग के कारण मधुमक्खी पालन ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का अच्छा साधन बन चुका है। केंद्र और राज्य सरकारें इस व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चला रही हैं। "मीठी क्रांति" जैसी योजनाओं के तहत कृषि और उद्यान विभाग किसानों को प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करते हैं। किसानों को मधुमक्खियों के पालन के लिए बॉक्स भी उपलब्ध कराए जाते हैं। National Bee Board और NABARD ने मिलकर मधुमक्खी पालन के लिए फाइनेंसिंग योजनाएं भी शुरू की हैं। इस व्यवसाय पर सरकार 80 से 85 प्रतिशत तक सब्सिडी देती है, जिससे किसान कम लागत में इसे शुरू कर सकते हैं।

3. मछली पालन व्यवसाय

Fish Farming भी किसानों के लिए तेजी से बढ़ता हुआ व्यवसाय है। बाजार में मछली के मांस और तेल की मांग लगातार बढ़ रही है, जिससे यह व्यवसाय लाभदायक बन गया है। यदि किसान के पास तालाब है तो वहां आसानी से मछली पालन किया जा सकता है। जिन किसानों के पास तालाब नहीं है, वे टैंक बनाकर भी इस व्यवसाय की शुरुआत कर सकते हैं। कम लागत में अधिक मुनाफा देने वाला यह व्यवसाय सरकार द्वारा भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। मछली पालकों को बैंकों के माध्यम से क्रेडिट कार्ड सुविधा दी जाती है, जिसके जरिए बिना गारंटी के 1.60 लाख रुपये तक का ऋण लिया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर 3 लाख रुपये तक का लोन भी उपलब्ध कराया जाता है। आधुनिक तकनीक अपनाकर किसान इस व्यवसाय से बेहतर कमाई कर सकते हैं।

4. मुर्गी पालन व्यवसाय

अंडे और चिकन की बढ़ती मांग के कारण Poultry Farming तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। गांवों से लेकर शहरों तक लोग इसे व्यवसाय के रूप में अपना रहे हैं। इस व्यवसाय को शुरू करने के लिए ज्यादा तकनीकी जानकारी की जरूरत नहीं होती, लेकिन उचित जगह और साफ-सफाई का ध्यान रखना जरूरी होता है। पोल्ट्री फार्म के लिए पर्याप्त जगह और बिजली की व्यवस्था होना जरूरी है। माना जाता है कि एक मुर्गी के लिए कम से कम एक वर्ग फुट जगह होनी चाहिए। यदि जगह थोड़ी अधिक हो, तो अंडों और चूजों के नुकसान की संभावना कम हो जाती है। इस व्यवसाय के लिए बैंक आसानी से लोन उपलब्ध कराते हैं और NABARD की सहायता से वित्तीय मदद भी ली जा सकती है। सरकार भी पोल्ट्री व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी प्रदान करती है। सामान्य वर्ग को लगभग 25 प्रतिशत और अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग को 35 प्रतिशत तक सब्सिडी का लाभ दिया जाता है। इससे छोटे किसान भी आसानी से इस व्यवसाय की शुरुआत कर सकते हैं।

5. बकरी पालन व्यवसाय

Goat Farming भी किसानों के लिए कम लागत वाला और फायदे का व्यवसाय है। इसे बहुत कम पूंजी में शुरू किया जा सकता है और इसके रखरखाव में भी ज्यादा खर्च नहीं आता। बकरियां झाड़ियों, पेड़ों की पत्तियों और घास पर आसानी से अपना भोजन कर लेती हैं, जिससे चारे पर खर्च कम होता है। बकरी पालन मुख्य रूप से दूध और मांस उत्पादन के लिए किया जाता है। किसान अपनी जरूरत और बाजार की मांग के अनुसार नस्ल का चयन कर सकते हैं। कई राज्य सरकारें बकरी पालन को बढ़ावा देने के लिए सहायता और प्रशिक्षण भी उपलब्ध कराती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में यह व्यवसाय रोजगार और अतिरिक्त आय का अच्छा साधन बनता जा रहा है। खेती के साथ कृषि आधारित व्यवसाय शुरू करना किसानों के लिए अतिरिक्त आय का मजबूत स्रोत बन सकता है। डेयरी, बकरी पालन, मुर्गी पालन, मछली पालन और मधुमक्खी पालन जैसे व्यवसाय कम लागत में अच्छा मुनाफा देने वाले विकल्प हैं। सरकार की ओर से मिलने वाली सब्सिडी और लोन सुविधाओं के कारण किसान आसानी से इन व्यवसायों की शुरुआत कर सकते हैं। सही

SONALIKA
जीतने का दम

दमदार ट्रैक्टर,
जो दे आपके भरोसे को दम

सोनालीका सिकंदर
DI 42 P+

2891 cc
दमदार इंजन,
205 Nmटॉर्क

ADVANCED 5G
HYDRAULICS
2000 kg
लिफ़्ट कॅपेसिटी

योजना और मेहनत के साथ किसान इन व्यवसायों से अपनी आर्थिक स्थिति को और मजबूत बना सकते हैं।

कम खर्च में तैयार करें पशुओं का पौष्टिक चारा, दूध उत्पादन भी बढ़ेगा

गर्मियों में पशुओं के लिए पौष्टिक चारा बनाना क्यों जरूरी

गर्मियों के मौसम में पशुपालकों को सबसे बड़ी चुनौती हरे चारे की कमी और महंगे पशु आहार की होती है। तापमान बढ़ने के साथ खेतों में हरा चारा कम हो जाता है, जबकि बाजार में मिलने वाला संतुलित पशु आहार काफी महंगा पड़ता है। इसका सीधा असर पशुओं के स्वास्थ्य, दूध उत्पादन और वजन पर दिखाई देता है। कई बार पोषण की कमी के कारण पशु कमजोर होने लगते हैं और उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी घट जाती है। ऐसे समय में किसान यदि कम लागत में पौष्टिक चारा तैयार कर लें, तो पशुपालन को लाभकारी बनाया जा सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार भूसे का यूरिया उपचार एक ऐसी वैज्ञानिक तकनीक है, जो सूखे भूसे को पौष्टिक पशु आहार में बदल सकती है। यह तरीका आसान होने के साथ-साथ बेहद किफायती भी माना जाता है।

देश में चारे की कमी बनी बड़ी समस्या

भारत दुनिया के सबसे बड़े पशुधन वाले देशों में शामिल है। देश में 53 करोड़ से अधिक पशुधन मौजूद है, लेकिन इनके लिए पर्याप्त पौष्टिक चारे की उपलब्धता आज भी बड़ी समस्या बनी हुई है। अधिकांश किसान गेहूं और धान के भूसे पर निर्भर रहते हैं, क्योंकि यह आसानी से उपलब्ध हो जाता है। हालांकि, सामान्य भूसे में पोषक तत्व बहुत कम होते हैं। इसमें प्रोटीन की मात्रा करीब 3 प्रतिशत या उससे भी कम होती है, जिससे पशुओं की पोषण जरूरत पूरी नहीं हो पाती। लगातार ऐसे चारे का उपयोग करने से पशुओं की वृद्धि रुक सकती है और दूध उत्पादन भी प्रभावित होता है। यही वजह है, कि वैज्ञानिक लंबे समय से भूसे की गुणवत्ता सुधारने पर जोर देते रहे हैं। यूरिया उपचार इसी दिशा में एक कारगर उपाय माना जाता है।

यूरिया उपचारित भूसा क्यों है बेहतर विकल्प

विशेषज्ञों के अनुसार भूसे का यूरिया उपचार करने से उसकी पौष्टिकता कई गुना बढ़ जाती है। इस प्रक्रिया में यूरिया से बनने वाली अमोनिया भूसे के रेशों को मुलायम बनाती है और उसकी पाचन क्षमता को बेहतर करती है। सामान्य भूसे में जहां प्रोटीन की मात्रा लगभग 3 प्रतिशत होती है, वहीं उपचार के बाद यह 6 से 8 प्रतिशत तक पहुंच सकती है।

इसके अलावा भूसे की ऊर्जा क्षमता और पाचनशीलता में भी सुधार होता है। उपचारित भूसा स्वाद में भी बेहतर हो जाता है, जिससे पशु इसे आसानी से खाते हैं। यही कारण है कि पशुपालकों के बीच यह तकनीक तेजी से लोकप्रिय हो रही है। कम खर्च में पौष्टिक चारा तैयार होने से किसानों की लागत घटती है और पशुओं को बेहतर पोषण मिल पाता है।

उपचारित भूसे से पशुपालकों को मिलते हैं कई फायदे

यूरिया उपचारित भूसा पशुओं के लिए कई तरह से फायदेमंद साबित होता है। उपचार के बाद भूसा नरम और स्वादिष्ट हो जाता है, जिससे पशु इसे चाव से खाते हैं और चारे की बर्बादी कम होती है। अधिक पोषण मिलने से पशुओं की सेहत बेहतर रहती है और दूध उत्पादन में भी सुधार देखा जा सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह का चारा खिलाने से महंगे दाने और सघन आहार की जरूरत लगभग 30 प्रतिशत तक कम हो सकती है। इससे पशुपालकों का खर्च घटता है और मुनाफा बढ़ता है। बछड़ों और बछड़ियों को यह चारा खिलाने पर उनका वजन तेजी से बढ़ता है और शरीर मजबूत बनता है। गर्मियों में जब हरे चारे की भारी कमी होती है, तब यह तकनीक पशुपालकों के लिए बड़ी राहत साबित हो सकती है।

सामान्य और उपचारित भूसे में कितना अंतर

सामान्य भूसे और यूरिया उपचारित भूसे के बीच पोषण स्तर में बड़ा अंतर देखने को मिलता है। साधारण भूसे में प्रोटीन केवल 3 से 3.5 प्रतिशत तक होता है, जबकि उपचारित भूसे में यह बढ़कर 6 से 8 प्रतिशत तक पहुंच जाता है। पाच्य प्रोटीन की मात्रा भी काफी बढ़ जाती है, जिससे पशु इसे बेहतर तरीके से पचा पाते हैं। ऊर्जा स्तर सामान्य भूसे में लगभग 40 से 45 प्रतिशत होता है, लेकिन उपचारित भूसे में यह 50 से 55 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। सबसे बड़ा सुधार पाचनशीलता में देखा जाता है। सामान्य भूसे की पाचन क्षमता जहां 40 से 45 प्रतिशत रहती है, वहीं उपचार के बाद यह 70 से 75 प्रतिशत तक हो सकती है। यही कारण है कि वैज्ञानिक इसे पशुपालन के लिए बेहद उपयोगी तकनीक मानते हैं।

ऐसे करें भूसे का यूरिया उपचार

भूसे का यूरिया उपचार करना बेहद आसान है और किसान इसे अपने घर या खेत पर ही कर सकते हैं। सबसे पहले 4 किलोग्राम यूरिया को 40 लीटर साफ पानी में अच्छी तरह घोल लें। इसके बाद लगभग 1 क्विंटल सूखे भूसे को समतल जमीन पर 3 से 4 इंच मोटी परत में फैला दें। अब तैयार घोल को स्प्रेयर या फव्वारे की मदद से भूसे पर समान रूप से छिड़कें, ताकि पूरा भूसा हल्का गीला हो जाए। इसके बाद भूसे को पैरों से दबाकर सघन करें। इसी तरह एक के ऊपर एक कई परतें बनाई जा सकती हैं और हर परत पर घोल का छिड़काव करना जरूरी होता है। अंत में पूरे ढेर को प्लास्टिक शीट से अच्छी तरह ढक दें, ताकि हवा अंदर न जा सके। गर्मियों में इसे कम से कम 3 सप्ताह और सर्दियों में लगभग 4 सप्ताह तक बंद अवस्था में रखना चाहिए। इस दौरान यूरिया से अमोनिया बनती है, जो भूसे को मुलायम और पौष्टिक बनाती है।

पशुओं को कैसे खिलाएं उपचारित चारा

जब उपचार प्रक्रिया पूरी हो जाए, तब जरूरत के अनुसार भूसे को ढेर से निकालकर उपयोग किया जा सकता है। शुरुआत में इस भूसे को लगभग आधे घंटे तक खुली हवा में फैला देना चाहिए, ताकि अतिरिक्त अमोनिया निकल जाए। इसके बाद इसे पशुओं को खिलाया जा सकता है। शुरुआत में पशुओं को थोड़ी मात्रा में यह चारा देना चाहिए, ताकि वे इसकी आदत डाल सकें। धीरे-धीरे इसकी मात्रा बढ़ाई जा सकती है। एक बार पशु इसके स्वाद के अभ्यस्त हो जाएं, तो इसे सीधे भी खिलाया जा सकता है। उपचारित भूसा सूखे मौसम में लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है, जिससे पूरे साल चारे की उपलब्धता बनी रहती है। यही कारण है कि यह तकनीक छोटे और मध्यम पशुपालकों के लिए बेहद उपयोगी मानी जाती है।

चारा तैयार करते समय बरतें जरूरी सावधानियां

यूरिया उपचारित भूसा तैयार करते समय कुछ जरूरी सावधानियों का पालन करना बेहद आवश्यक है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यूरिया घोल को

हमेशा पशुओं और बच्चों की पहुंच से दूर रखा जाए। यूरिया को कभी भी सीधे पशुओं को नहीं खिलाना चाहिए, क्योंकि यह नुकसानदायक हो सकता है। उपचारित भूसे को कम से कम 3 सप्ताह बाद ही उपयोग में लाना चाहिए, ताकि प्रक्रिया पूरी तरह सफल हो सके। प्लास्टिक कवर को अच्छी तरह बंद रखना जरूरी है, क्योंकि हवा अंदर जाने से उपचार प्रभावित हो सकता है। इसके अलावा भूसे पर यूरिया घोल का समान रूप से छिड़काव करना भी बेहद जरूरी होता है। विशेषज्ञों का मानना है, कि यदि किसान फसल कटाई के समय ही भूसे का उपचार कर लें, तो पूरे साल पौष्टिक चारे की चिंता काफी हद तक खत्म हो सकती है। सही विधि और सावधानी के साथ अपनाई गई यह तकनीक पशुपालकों के लिए कम खर्च में अधिक मुनाफा दिलाने का प्रभावी उपाय साबित हो सकती है।

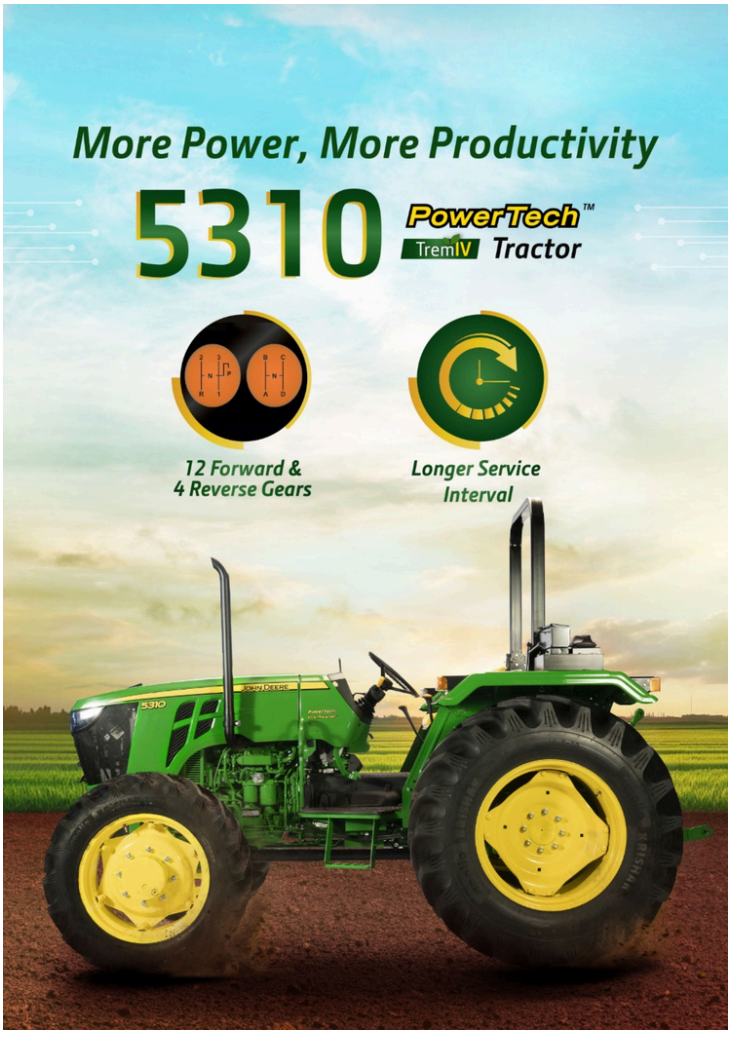

बायोबीऑन गोल्ड और Udder-H गोल्ड लिक्विड अपने पशुओं को खिलाए और दूध का बंपर उत्पादन पाए

एनीमैक्स फार्मा पशु स्वास्थ्य देखभाल उद्योग में तेजी से विकसित होने वाली कंपनी है। वर्ष 2007 में, कंपनी ने अपने संचालन की शुरुआत देश के उत्तरी क्षेत्रों में की, जिनमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्से शामिल हैं। पशु चिकित्सा क्षेत्र के पशुपालकों और किसानों ने कंपनी के कई उत्पादों को स्वीकार किया है, जिससे इसे तेजी से पहचान और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। वास्तव में, पशुओं के स्वास्थ्य को बनाए रखने की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, कंपनी विभिन्न चिकित्सीय क्षेत्रों में पोषण और वृद्धि को बढ़ावा देने वाले उत्पाद लगातार प्रदान कर रही है। इस लेख में हम आपको इस कंपनी के दो उत्पादों बायोबीऑन गोल्ड और Udder-H गोल्ड लिक्विड के बारे में जानकारी देंगे जिनको आप पशुओं को खिलाकर अच्छा दूध

उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।

बायोबीऑन गोल्ड: पशुओं के प्रजनन और दुग्ध उत्पादन के लिए संपूर्ण पोषण पूरक

बायोबीऑन गोल्ड एक वैज्ञानिक रूप से तैयार किया गया पोषण पूरक (Supplement)है, जो पशुओं में प्रजनन संबंधी समस्याओं को दूर करने, दुग्ध उत्पादन बढ़ाने और संक्रमण के जोखिम को कम करने में सहायक है।

इसमें आवश्यक खनिज, अमीनो एसिड चिलेट्स, प्रोबायोटिक्स और प्रीबायोटिक्स शामिल हैं, जो पशुओं के स्वास्थ्य को संपूर्ण रूप से बढ़ावा देते हैं।

बायोबीऑन गोल्ड में मौजूद पोषक तत्व (प्रत्येक 1.2 किग्रा में शामिल हैं):

- डाई-कैल्शियम फॉस्फेट: 928 ग्राम – हड्डियों की मजबूती और प्रजनन क्षमता में सुधार करता है।
- मैग्नीशियम कार्बोनेट: 40 ग्राम – चयापचय को बढ़ावा देता है और मांसपेशियों के कार्य को सुचारू रखता है।
- जिंक अमीनो एसिड चिलेट्स: 10 ग्राम – प्रतिरक्षा बढ़ाता है और प्रजनन क्रियाओं को सुचारू करता है।
- मैंगनीज अमीनो एसिड चिलेट्स: 4 ग्राम – हड्डी और जोड़ संबंधी स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।
- कॉपर अमीनो एसिड चिलेट्स: 3 ग्राम – लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में सहायक होता है और प्रजनन तंत्र को मजबूत करता है।
- पोटैशियम आयोडाइड: 1 ग्राम – थायरॉयड ग्रंथि को सुचारू रूप से कार्य करने में मदद करता है।
- मैन्नान ओलिगोसेकेराइड्स: 50 ग्राम – पाचन में सुधार करता है और हानिकारक बैक्टीरिया को नष्ट करता है।
- बैसिलस सबटिलिस (5 बिलियन CFU/g): 20 ग्राम – लाभकारी बैक्टीरिया प्रदान करता है, जिससे आंतों के स्वास्थ्य में सुधार होता है।

बायोबीऑन गोल्ड बाजार में किन पैक साइज में उपलब्ध है

यह पूरक विभिन्न पैक साइज में उपलब्ध है:

- 1.2 किग्रा
- 5 किग्रा
- 10 किग्रा
- 20 किग्रा

पशओं को बायोबीऑन गोल्ड खिलाने के लाभ

बायोबीऑन गोल्ड निम्नलिखित समस्याओं के प्रबंधन और रोकथाम के लिए अत्यंत उपयोगी है:

- पशु को हीट में लाने में लाभकारी (Anoestrus): पशुओं में प्रजनन चक्र को सक्रिय करता है और गर्मी चक्र को नियमित करता है।
- साइलेंट हीट (Silent Heat): गर्मी के लक्षणों को स्पष्ट करता है, जिससे गर्भाधान दर में सुधार होता है।
- बांझपन (Infertility): गर्भधारण दर को बढ़ाने में मदद करता है।
- प्रजनन क्षमता को बढ़ावा देता है: पशुओं में प्रजनन से जुड़ी समस्याओं को दूर करता है और गर्भधारण की संभावना को बढ़ाता है।
- दोहराया गर्भाधान विफलता (Repeat Breeding): बार-बार गर्भाधान की विफलता को रोकता है और पशुओं की प्रजनन क्षमता में सुधार करता है।
- उच्च दुग्ध उत्पादन और वसा प्रतिशत में वृद्धि: दूध उत्पादन और उसमें वसा की मात्रा को बढ़ाने में सहायक।
- बीमारियों के प्रकोप में पशु हानि को कम करना: प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाकर संक्रमण से रक्षा करता है।

बायोबीऑन गोल्ड की पशुओं को कितनी खुराक दे (Dosage):

- दूध देने वाले पशु (Milch Animals): 50-60 ग्राम प्रतिदिन
- गर्भित गाय-बछिया (Heifers): 30-40 ग्राम प्रतिदिन

आहार मिश्रण अनुपात (Feed Mixing Ratio):

बायोबीऑन गोल्ड को चारे में निम्नलिखित अनुपात में मिलाया जाता है:

- पशु चारा: 1.2 किग्रा को 300 किग्रा चारे में मिलाया जाए।
- मत्स्य आहार (Aqua Feed): 6 किग्रा को 1500 किग्रा चारे में मिलाया जाए।

उपयोग दिशा-निर्देश (Usage Guidelines):

- इसे प्रतिदिन अनुशंसित खुराक में दें।
- चारे में मिलाकर या सीधे दिया जा सकता है।
- ठंडी और सूखी जगह पर स्टोर करें।
- गंभीर स्थिति में पशु चिकित्सक से सलाह लें।

Udder-H gold liquid पशुओं के थनों और संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए लाभकारी

Udder-H गोल्ड लिक्विड विशेष रूप से पशुओं के थनों, त्वचा, प्रजनन तंत्र और संपूर्ण स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक है। यह आवश्यक विटामिन, खनिज और पोषक तत्वों से भरपूर है, जो पशुओं को स्वस्थ और उत्पादक बनाए रखने में मदद करता है।

विशेष रूप से दुग्ध उत्पादक पशुओं के लिए, यह थनों की समस्याओं को रोकने और दूध की गुणवत्ता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Udder-H gold liquid में मौजूद पोषक तत्व (प्रत्येक 1 मिलीलीटर में शामिल हैं)

विटामिन H (बायोटिन) 1200 माइक्रोग्राम – खुर, त्वचा और बालों के स्वास्थ्य को बनाए रखता है।

- विटामिन C: 50 मिलीग्राम – प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है और तनाव को कम करता है।
- विटामिन A: 30,000 I.U. – त्वचा और थनों के ऊतकों की मरम्मत और वृद्धि में सहायक।
- विटामिन D3: 20,000 I.U. – हड्डियों, थनों और प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करता है।
- विटामिन E: 800 मिलीग्राम – एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट, जो कोशिकाओं की रक्षा करता है और ऊतकों की मरम्मत करता है।
- मेथाइलकोबालामिन (विटामिन B12): 1200 माइक्रोग्राम – लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में सहायक और तंत्रिका तंत्र के कार्य को बढ़ाता है।
- जिंक: 18 मिलीग्राम – त्वचा, प्रतिरक्षा प्रणाली और घाव भरने की प्रक्रिया में मदद करता है।

Udder-H gold लिक्विड के बाजार में उपलब्ध पैक साइज

यह पूरक विभिन्न पैक साइज में उपलब्ध है:

- 500 मिलीलीटर
- 1 लीटर

Udder-H gold लिक्विड के लाभ

- असमान लेवटी (Uneven Udder): थनों की संरचना को संतुलित करने में मदद करता है और दूध उत्पादन को समान करता है।
- रिसाव वाले थन (Leaky Teats): दूध के अनावश्यक रिसाव को नियंत्रित करता है, जिससे दुग्ध हानि रोकी जा सकती है।
- छोटे आकार के थन (Smaller Size Udder): थनों की वृद्धि को बढ़ावा देता है और दूध उत्पादन क्षमता में सुधार करता है।
- थन सूजन (Udder Edema): थनों की सूजन और जल प्रतिधारण (Edema) को कम करता है।

रूखा बाल कोट (Rough Hair कोट): पशु

की त्वचा और बालों की गुणवत्ता में सुधार करता है, जिससे बाल मुलायम और चमकदार बनते हैं।

- थन की त्वचा संबंधी समस्याएं (Udder Dermatitis): थनों की त्वचा पर होने वाली जलन और संक्रमण से बचाव करता है।
- गर्मी तनाव (Heat Stress): गर्मी के कारण होने वाले तनाव को कम करता है और पशुओं को ऊष्णकटिबंधीय स्थितियों में स्वस्थ बनाए रखता है।
- प्रजनन विकार (Reproductive Disorders): प्रजनन क्षमता में सुधार करता है और बांझपन की समस्या को दूर करता है।
- लैमिनाइटिस (Laminitis): खुरों की मजबूती में मदद करता है और सूजन को कम करता है।
- त्वचा रोग (Skin Disease): त्वचा को स्वस्थ बनाए रखता है और एलर्जी, जलन और खुजली जैसी समस्याओं को दूर करता है।
- कोलिफॉर्म मास्टाइटिस (Coliform Mastitis): मास्टाइटिस जैसी संक्रमणजनित बीमारियों के जोखिम को कम करता है और थनों के स्वास्थ्य को बनाए रखता है।

खुराक (Dosage):

- बड़े पशु (Large Animals) (गाय, भैंस, घोड़े आदि): 10 मिलीलीटर प्रतिदिन।
- छोटे पशु (Small Animals) : 2-5 मिलीलीटर प्रतिदिन।

उपयोग दिशा-निर्देश (Usage Guidelines):

- इसे प्रतिदिन अनुशंसित खुराक में दें।
- चारे में मिलाकर या सीधे दिया जा सकता है।
- ठंडी और सूखी जगह पर स्टोर करें।
- गंभीर स्थिति में पशु चिकित्सक से सलाह लें।

बायोबीऑन गोल्ड और Udder-H gold दोनों ही पशुओं के थनों, त्वचा, प्रजनन तंत्र और संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है। इसके नियमित उपयोग से पशुओं की प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है, थनों की समस्याओं से राहत मिलती है और दूध उत्पादन में सुधार होता है।

यह उत्पाद विशेष रूप से डेयरी फार्मिंग और पशुपालन में उपयोग के लिए उपयुक्त है, जिससे पशुओं का स्वास्थ्य बेहतर बना रहता है और उनकी उत्पादकता में वृद्धि होती है।

हींग की खेती कैसे करें: होगी लाखों रुपए की कमाई

भारत में हींग की खेती कैसे होती - जानें पूरी जानकारी

भारत में हींग की मांग बहुत अधिक है, लेकिन हैरानी की बात यह है कि इसका उत्पादन अभी भी देश में बड़े पैमाने पर नहीं होता। इसी वजह से भारत को हर साल हींग के लिए विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है। देश में लगभग 1200 टन से ज्यादा शुद्ध हींग की खपत होती है और इसके आयात पर करीब 600 करोड़ रुपये खर्च किए जाते हैं। भारत मुख्य रूप से अफगानिस्तान, ईरान और उज्बेकिस्तान जैसे देशों से हींग मंगाता है, जिसमें सबसे बड़ा हिस्सा अफगानिस्तान का होता है। ऐसे में अगर किसान इसकी खेती शुरू करें, तो यह एक बेहद लाभकारी

व्यवसाय बन सकता है और देश को आत्मनिर्भर बनाने में भी मदद मिल सकती है।

भारत में हींग की खेती की पहल

हींग की खेती (Hing farming) को बढ़ावा देने के लिए लाहौल-स्पीति के रिबलिंग स्थित Centre of High Altitude Biology (CHAB) में विशेष अनुसंधान किया जा रहा है। यहां बीजों से तैयार पौधों को उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में लगाया गया है और विभिन्न स्थानों पर परीक्षण चल रहे हैं। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, लद्दाख और जम्मू-कश्मीर जैसे ठंडे और शुष्क क्षेत्रों को इसके लिए उपयुक्त माना गया है। यह प्रयास देश में पहली बार हो रहा है और इसके सफल होने पर न केवल किसानों की आय बढ़ेगी बल्कि युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी बनेंगे।

हींग का परिचय और उपयोग

हींग का वैज्ञानिक नाम Ferule asafoetida है और यह एपिएसी कुल का बहुवर्षीय पौधा है। यह मुख्य रूप से ईरान और अफगानिस्तान के पहाड़ी क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। इसकी जड़ों से निकलने वाला दूधिया पदार्थ सुखाकर हींग बनाई जाती है। भारतीय रसोई में हींग का उपयोग मसाले के रूप में बेहद महत्वपूर्ण है, खासकर दाल और सब्जियों में। इसके अलावा आयुर्वेद में भी इसके औषधीय गुणों का व्यापक उल्लेख मिलता है।

हींग की खेती के लिए बीज और पौध तैयार करने की प्रक्रिया

हींग के बीज हल्के भूरे रंग के और चपटे होते हैं, लेकिन इनमें निष्क्रियता (Dormancy) होने के कारण ये आसानी से अंकुरित नहीं होते। इसलिए बीजों को अंकुरित करने के लिए विशेष उपचार की आवश्यकता होती है, जैसे कि ठंडा उपचार (चिलिंग ट्रीटमेंट)। बीजों को आमतौर पर अक्टूबर-नवंबर में बोया जाता है ताकि प्राकृतिक ठंड के प्रभाव से उनकी निष्क्रियता टूट सके।

हींग की खेती में प्रवर्धन और प्रजनन

हींग एक बहुवर्षीय पौधा है, जिसमें फूल आने में लगभग 5 साल का समय लगता है। इसके फूल पीले रंग के होते हैं और एक ही पौधे में नर और मादा दोनों प्रकार के फूल पाए जाते हैं। कीटों के माध्यम से इसका परागण होता है। मई-जून के दौरान फूल आते हैं और अगस्त तक बीज तैयार हो जाते हैं। ध्यान रखने वाली बात यह है कि जिस पौधे से बीज लिया जाए, उससे हींग का रस नहीं निकालना चाहिए।

हींग की खेती में बुवाई और खेत की तैयारी

हींग की खेती (asafoetida cultivation) के लिए ढलानदार और अच्छी जल निकासी वाली भूमि सबसे उपयुक्त होती है, खासकर पहाड़ी क्षेत्रों में जहां धूप सीधी पड़ती है। एक हेक्टेयर क्षेत्र में सीधे बीज बोने के लिए लगभग 1 किलो बीज पर्याप्त होता है। यदि पहले नर्सरी में पौधे तैयार कर लिए जाएं, तो बीज की मात्रा कम हो सकती है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 1 से 1.5 मीटर और पौधे से पौधे की दूरी 0.75 से 1 मीटर रखनी चाहिए।

हींग की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी की आवश्यकता

हींग के लिए ठंडा और शुष्क वातावरण सबसे उपयुक्त होता है। यह पौधा 5 से 10 डिग्री सेल्सियस तक के न्यूनतम तापमान और 35 से 40 डिग्री सेल्सियस तक के अधिकतम तापमान को सहन कर सकता है। इसके लिए अच्छी धूप आवश्यक होती है। मिट्टी की बात करें तो रेतीली दोमट मिट्टी, जिसमें जल निकासी अच्छी हो, इसके लिए सबसे बेहतर रहती है। जलभराव की स्थिति इस फसल के लिए बेहद हानिकारक होती है।

हींग की खेती के लिए सिंचाई और देखभाल

हींग की जड़ें गहरी होती हैं, इसलिए इसे ज्यादा पानी

की जरूरत नहीं होती। रोपाई के बाद शुरुआती एक महीने तक 2-3 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। इसके बाद आवश्यकतानुसार ही पानी दें। अधिक पानी या जलभराव से पौधे खराब हो सकते हैं। समय-समय पर निराई-गुड़ाई करना भी जरूरी है ताकि खरपतवार नियंत्रित रहें।

हींग का उत्पादन और संग्रह

हींग के पौधे से उत्पादन लेने में लगभग 4 से 5 साल का समय लगता है। फूल आने से पहले पौधे की जड़ में चीरा लगाकर दूधिया राल निकाला जाता है। यह प्रक्रिया कई बार दोहराई जाती है, जब तक राल निकलना बंद न हो जाए। इस राल को सुखाकर हींग बनाई जाती है। यह 'आंसू', 'मास' और 'पेस्ट' जैसे विभिन्न रूपों में बाजार में उपलब्ध होती है।

हींग की खेती के लिए लागत और मुनाफा

हींग की कीमत गुणवत्ता के अनुसार काफी अधिक होती है, जो लगभग 5,000 रुपये से 25,000 रुपये प्रति किलो तक हो सकती है। एक पौधे से करीब 20–25 ग्राम हींग प्राप्त होती है। यदि एक हेक्टेयर में खेती की जाए, तो 5 साल बाद लगभग 9 लाख रुपये तक की आय प्राप्त की जा सकती है। हींग की खेती भारत में एक उभरता हुआ और लाभकारी विकल्प बन सकती है। सही जलवायु और तकनीक के साथ किसान इस फसल से अच्छी कमाई कर सकते हैं। यदि सरकार और अनुसंधान संस्थानों का सहयोग इसी तरह मिलता रहा, तो आने वाले समय में भारत हींग उत्पादन में आत्मनिर्भर बन सकता है और किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है।

बंजर जमीन में अश्वगंधा की खेती कैसे करें: सही तरीका, समय और उन्नत तकनीकें

जानें, बंजर जमीन पर अश्वगंधा की खेती की पूरी जानकारी

अश्वगंधा आज के समय में किसानों के लिए एक ऐसी नकदी और औषधीय फसल बनकर उभरी है, जो कम लागत में अधिक लाभ देने की क्षमता रखती है। खास बात यह है कि इसकी मुख्य उपज जड़ होती है, लेकिन पौधे का हर हिस्सा पत्ते, बीज और तना भी बाजार में उपयोगी और बिकाऊ है। यही कारण है, कि अश्वगंधा की खेती करने वाले किसान किसी एक उत्पाद पर निर्भर नहीं रहते, बल्कि उन्हें बहुआयामी आय के अवसर मिलते हैं। कम उपजाऊ, बंजर या सिंचाई रहित भूमि वाले किसान भी इसे आसानी से उगा सकते हैं। यह उन क्षेत्रों के लिए वरदान है जहां पारंपरिक फसलें उगाना मुश्किल होता है।

उपयुक्त जलवायु और मिट्टी की आवश्यकता

अश्वगंधा की खेती के लिए शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु सबसे उपयुक्त मानी जाती है। लगभग 500 से 700 मिमी वार्षिक वर्षा और 30 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान इसकी बेहतर वृद्धि के लिए आदर्श है। यह फसल खारे पानी और कम उर्वर भूमि में भी अच्छी तरह बढ़ती है। खास बात यह है कि यदि इसकी सिंचाई हल्के खारे पानी से की जाए, तो इसमें पाए जाने वाले औषधीय तत्व 'एल्कलॉइड' की मात्रा दो से ढाई गुना तक बढ़ जाती है। इस कारण इसकी गुणवत्ता और बाजार मूल्य दोनों में वृद्धि होती है।

वानस्पतिक परिचय और पौधे की विशेषताएं

अश्वगंधा का वानस्पतिक नाम विथानिया सोम्निफेरा है। इसका पौधा सामान्यतः 40 से 150 सेंटीमीटर तक ऊंचा होता है और इसका तना सीधा तथा शाखायुक्त होता है। इसकी जड़ें लंबी, मोटी और अंडाकार होती हैं, जो बाजार में सबसे ज्यादा मूल्यवान होती हैं। इसके फूल हरे या हल्के पीले रंग के होते हैं, जबकि फल छोटे, गोल और लाल रंग के होते हैं जिनमें कई बीज पाए जाते हैं। यह पौधा रोगों से अपेक्षाकृत सुरक्षित रहता है और इसे रासायनिक उर्वरकों की बहुत कम आवश्यकता होती है।

देश में मांग और प्रमुख उत्पादन क्षेत्र

भारत में अश्वगंधा की मांग लगातार बढ़ रही है, जबकि उत्पादन अपेक्षाकृत कम है। देश में लगभग 5000 हेक्टेयर भूमि पर इसकी खेती होती है और वार्षिक उत्पादन करीब 1600 टन है, जबकि मांग लगभग 7000 टन तक पहुंच चुकी है। इस अंतर के कारण किसानों को बाजार में अच्छी कीमत मिलती है। मध्य प्रदेश के मंदसौर, नीमच, जावड़ और भानपुरा क्षेत्र तथा राजस्थान के नागौर जिले में इसकी खेती विशेष रूप से प्रसिद्ध है। नागौरी अश्वगंधा की गुणवत्ता के कारण इसकी अलग पहचान बनी हुई है।

औषधीय उपयोग और पोषक तत्व

अश्वगंधा का उपयोग आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा में लंबे समय से किया जा रहा है। इसकी सूखी जड़ों से कई प्रकार की औषधियां बनाई जाती हैं, जो तनाव, चिंता और अनिद्रा जैसी समस्याओं को दूर करने में सहायक होती हैं। यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और तंत्रिका तंत्र को मजबूत करता है। इसके अलावा, इसका उपयोग गठिया, कैंसर, त्वचा रोग, पेट के अल्सर, फेफड़ों की सूजन और अन्य कई रोगों के उपचार में किया जाता है। इसमें विथानिन, विथाफेरिन, कोलीन, निकोटीन जैसे एल्कलॉइड, साथ ही ग्लाइकोसाइड, अमीनो अम्ल और शर्करा भी पाए जाते हैं, जो इसे अत्यंत लाभकारी बनाते हैं।

खेती की विधि और उन्नत बीज

अश्वगंधा की खेती वर्ष में दो बार की जा सकती है—रबी (फरवरी-मार्च) और खरीफ (अगस्त-सितंबर) मौसम में। इसकी फसल लगभग 5 महीनों में तैयार हो जाती है। किसान इसे बीज छिड़काव विधि या नर्सरी से पौध तैयार कर रोपाई के माध्यम से उगा सकते हैं। नर्सरी जून-जुलाई में तैयार की जाती है। पौधों के बीच 5 से 10 सेंटीमीटर और पंक्तियों के बीच लगभग एक फुट की दूरी रखना उचित रहता है। 'पोषिता' और 'रहिता' जैसी उन्नत किस्में शुष्क क्षेत्रों के लिए बेहतर मानी जाती हैं और इनकी उत्पादकता भी अधिक होती है।

फसल प्रबंधन: सिंचाई, खाद और सुरक्षा

अश्वगंधा को बहुत कम सिंचाई की आवश्यकता होती है, इसलिए यह वर्षा आधारित खेती के लिए उपयुक्त है। यदि खेत में जल निकासी अच्छी हो, तो सिंचित क्षेत्रों में भी इसे उगाया जा सकता है। बुवाई से पहले गोबर की खाद या सीमित मात्रा में नाइट्रोजन का उपयोग पर्याप्त होता है। फसल में समय-समय पर निराई-गुड़ाई करना जरूरी है ताकि जड़ों का विकास बेहतर हो सके। रोग और कीट नियंत्रण के लिए बीजों को थिरम या डाइथेन एम-45 से उपचारित करना

चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर कीटनाशकों का छिड़काव करना चाहिए।

कटाई, उपज, लागत और लाभ

अश्वगंधा की फसल 135 से 150 दिनों में तैयार हो जाती है। जब पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं, तब इसकी खुदाई की जाती है। जड़ों को निकालकर साफ कर धूप में सुखाया जाता है और फिर आकार के अनुसार छांटा जाता है। एक हेक्टेयर में सामान्यतः 7-8 क्विंटल ताजी जड़ें प्राप्त होती हैं, जो सूखने के बाद 4-5 क्विंटल रह जाती हैं। इसके साथ 50-60 किलोग्राम बीज भी मिलते हैं। इसकी खेती की लागत लगभग 10-12 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर होती है, जबकि बाजार में जड़ें 150-200 रुपये प्रति किलोग्राम तक बिकती हैं। इस प्रकार किसान लागत से कई गुना अधिक लाभ कमा सकते हैं, जिससे यह फसल आर्थिक रूप से बेहद फायदेमंद साबित होती है।

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501

Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010